Janseva Foundation Loni Budruks

Arts & Commerce College, Shendi

Tal-Akole, Dist-Ahmednagar Pin-422604

Unipune ID- PU/AN/AC/93/2007 Email- principal.acshendi@pravara.in

Website- www.acscollegeshedi.in

Self Study Report: 2023 (1st Cycle)

DVV Clarification

Criterion No. 3

Research, Innovations and Extension

Key Indicator 3.3

Research Publications and Awards

Metric : 3.3.2 QnM

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

3.3.2.1. Total number of books and chapters in edited volumes/books conference proceedings published and papers in national/ international year wise during last five years

3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five year

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication	ISBN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	Wagh J.N	Hindi aurmarathidalitsahitymeiabhivyaktkrantichetana	Dalit sahityakiAvdharana	Hindu aur Marathi dalitsahityameinabhivyaktkrantichetna	Hindi aurmarathidalitsahitymeiabhivyaktkrantichetana	International	2020 Feb	ISBN 978-93-89925-01-2	Mumbai University	vidyapeethprakashan
2	Bangar N.P.	Hindi aurmarathidalitsahitymeiabhivyaktkrantichetana	Dalit SahityacheVeglepan	Hindu aur Marathi dalitsahityameinabhivyaktkrantichetna	Hindi aurmarathidalitsahitymeiabhivyaktkrantichetana	International	2020 Jan	ISBN 978-93-89925-01-2	Mumbai University	vidyapeethprakashan
3	Dr.Ghule S.M	Hindi aurdevngarilipi	Mere Path Pradarshak	Hindi AurDevnagariLipi	Hindi aurdevngarilipi	National	2020 Jan	ISBN:978-93-80788-91-3	SavitribaiPhule Pune University	Shilajaprakashan, kanpur
4	Bachhav A.V	prabodhshilpiannabhausathe	Anna BhauSatheYaanchya Saahityaatil Shri Citran	prabodhshilpiannabhausathe	Literary Emperor Anna BhauSathe	National	2020 May	ISBN 978-93-85426-56-8	Mumbai University	ShivaniPrakashan Pune

5	Dr.Ghule S.M	IAMPACT Of Globalization On Language And Literature	VaishvikaranAurJansancharMadhyam	Impact Of Globalization on Language and Literature	vishvikarnka Hindi bhashaursahityprprabhav	International	2022 April	ISBN-978-93-94403-00-0	SavitribaiPhule Pune University	Prashant Publisher , Jalgav

Janseva Foundation Loni Bk's Art's And Commerce College A/p.Shendi (Bhandardara) Tal.Akole, Dist.A'Nagar Pin-422604

PRINCIPAL
Janseva Foundation Loni Bk's
Art's And Commerce College,
Shendi(Bhandardara)-422604
Tal.Akole. Dist. Ahmednagar,

INDEX

2019-20

Sr. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapter published	Title of the paper
1	WaghJanardanNamdev	Hindu aur Marathi dalitsahityameinabhivyaktkrantichetna	Dalit sahityakiavdharna
2	BangarNamdevPandu	Hindu aur Marathi dalitsahityameinabhivyaktkrantichetna	Dalit SahityacheVegalepan
3	Dr. GhuleSheelaMahadu	Hindi AurDevnagariLipi	Mere Path Pradarshak
4	Mrs. BachhavArchanaValchand	Annabhausatheyanchyasahityatilstrichitran	Annabhausatheyanchyasahityatilstrich

Janseva Foundation Loni Bk's Art's And Commerce College A/p.Shendi (Bhandardara) Tal.Akole, Dist.A'Nagar Pin-422604

PRINCIPAL
Janseva Foundation Loni Bk's
Art's And Commerce College,
Shendi(Bhandardara)-422604
Tal.Akole, Dist. Ahmednagar,

Dalit sahityakiavdharna

।। विद्या विनयेन शोभते।।

जनार्दन भगत शिक्षण प्रसारक संस्था का

चांगू काना ठाकूर

कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त), नवीन पनवेल

नैक द्वारा 'अ' दर्जा प्राप्त ३.६१ सी.जी.पी.ए.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'विशेष गुणवत्ता एवं क्षमता का स्तर प्राप्त'

मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा 'सर्वोत्तम महाविद्यालय' सम्मान प्राप्त

हिंदी-विभाग

एवं

आंतरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)

आयोजित

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) द्वारा पुरस्कृत

द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक १४-१५ फरवरी, २०२०

''हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त क्रांति चेतना''

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/प्रा./प्रो. वाघ जर्नादन नामदेव ने द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष अतिथि/सत्राध्यक्ष/ विषय प्रवर्तक/शोध आलेख वाचक/सूत्रसंचालक/प्रतिभागी के रूप में सक्रिय सहभाग लेकर संगोष्ठी को सफल एवं सार्थक बनाया। एतदर्थ यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

शोध आलेख विषय-'दलित साहित्य की अवधारणा'

डॉ. गीतिका एस.तॅवर
सहयोगी प्राध्यापिका
सह-संयोजक

डॉ. उद्धव तुकाराम भंडारे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
संयोजक

डॉ. वसंत बन्हाटे
प्राचार्य
चांगू काना ठाकूर
कला वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, नवीन पनवेल

चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय
(स्वायत्त), नवीन पनवेल
द्वि दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
१४-१५ फरवरी, २०२०
हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त
क्रांति चेतना
संपादक
Scanned with CamScanner

विद्यापीठ प्रकाशन
(ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग,
विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
ISBN : 978-93-89925-01-2

मूल्य: ₹ 200/-

Hindi Aur Marathi Dalit Sahitya mein Abhivyaktya Kranti Chetana

Edited By : Dr. Udhav Tukaram Bhandare

भारत में मुद्रित

विद्यापीठ प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग, विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com
क्रियेटिव पारस प्रिंटर्स, लोअर परेल, मुंबई

- दलित साहित्य की शिल्पगत विशेषताएँ
  मिनहाज अली ८१
- डॉ. तुलसी राम और कौशल्या वैसन्त्री के आत्मकथाओं में दलित क्रांति
  सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ८२
- दलित साहित्य की अवधारणा
  प्रा. जनार्दन नामदेव वाघ ८३
- दलित साहित्य की अवधारणा
  डॉ. नितीन कुंभार ८४
- दलित साहित्य में यथार्थ का भविष्यवेध
  प्रा.डॉ. मनोज महाजन ८५
- नई कविता में दलित चेतना
  डॉ. संतोष मोटवानी ८६
- दलित विमर्श का परिचय
  संतोष मुन्नेश्वर ८७
- हिन्दी एवं मराठी दलित कविता में प्रस्तावित मानवाधिकार
  डॉ. गौतम कांबले ८८
- दलित साहित्य की प्रेरणा: शाहू महाराज का योगदान
  डॉ.देवीदास बोर्डे ८९
- रमणिका गुप्ता और सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा में क्रांति चेतना
  प्रा. डॉ. प्रदीप बबनराव पंडित ९०
- दलित साहित्य की सामाजिक प्रेरणा : डॉ. आंबेडकर का सामाजिक योगदान
  मनोज कुमार एम. जी ९१
- डॉ.सुशीला टाकभौरे के कथा-साहित्य में दलित चेतना
  धर्मेन्द्र कुमार ९२
- ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित क्रांति चेतना
  जावेद आलम गयासुद्दीन खान ९३
- समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित चेतना
  प्रशांत देशपांडे ९४
- डॉ. आंबेडकर, दलित पैंथर और विद्यापीठ आंदोलन की पृष्टभूमि
  व्यंकट ब. धारासुर ९५
- दयानंद बटोही के 'सुरंग' कहानी में क्रांति चेतना
  डॉ. शंकर रा. पजई ९६

Scanned with CamScanner

दलित साहित्य की अवधारणा

प्रा. जनार्दन नागदेव वाघ

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत के रूप में चली आ रही है। सामाजिक अव्यवस्था को व्यवस्थित बनाए रखना साहित्यकारों का मूल लक्ष्य रहा है। साहित्यकार भी समाज का एक अभिन्न अंग है, इसलिए समाज में होनेवाली सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी कुरीतियों तथा उनसे जुड़े हर पहलू को वे कृतिबद्ध करना शुरू कर देते हैं। भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण-व्यवस्था, जाति, अस्पृश्यता, शोषण, दमन और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष की लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया है। समाज में हो रहे अन्याय, अत्याचार और वर्चस्व के विरुद्ध सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन चलते रहे। यह आंदोलन कभी तीव्रता से तो कभी ठहराव से समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप नए आकार को ग्रहण करते गए। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को अग्रसर करते हुए आज दलित साहित्य में वर्ण व्यवस्था के विरोध में एक सशक्त आंदोलन है। हिंदू धर्म प्रणित समाज व्यवस्था इतनी जटिल है, कि आज भी भारतीय समाज हजारों जातियों में बटा हुआ है।

'दलित' शब्द का अर्थ है- जिसका दलन और दमन हुआ है, जिसे दबाया गया है, उत्पीड़ित, पीड़ित शोषित सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, साहित्य वंचित आदि अर्थों में हो सकता है। भारतीय समाज में जिसे अस्पृश्य माना गया वह व्यक्ति दलित है। दुर्गम पहाड़ों, वनों के बीच जीवन यापन के लिए बाध्य जनजातियां और आदिवासी घोषित जातियां सभी इस दायरे में आते हैं। सभी वर्गों की स्त्रियां दलित है। बहुत कम श्रम मूल्य पर चौबीसों घंटे काम करने वाले बंधुआ, मजदूर भी दलित की श्रेणी में आते हैं। डॉ. आंबेडकर ने 'दलित' शब्द को अस्पृश्य के स्थान पर अपनाया। अस्पृश्य की जो व्याख्या अनटचेबल (The Untouchable) नामक आपने ग्रंथ में दी उससे यही पता चलता है, कि 'दलित'का आशय डॉ. आंबेडकर ने गिरिजन, विमुक्त जाति या अपराधी घोषित की हुई जातियां एक्स क्रिमिनल ट्राइब्स (Ex Criminal Tribes) डिनोटिफाइड (Denotified) और अछूत इन तीनों समुदायों को अस्पृश्य (दलित) कहा जाता है।

सहा. प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
अकोले, जिला-अहमदनगर

Scanned with C...

Dalit SahityacheVegale

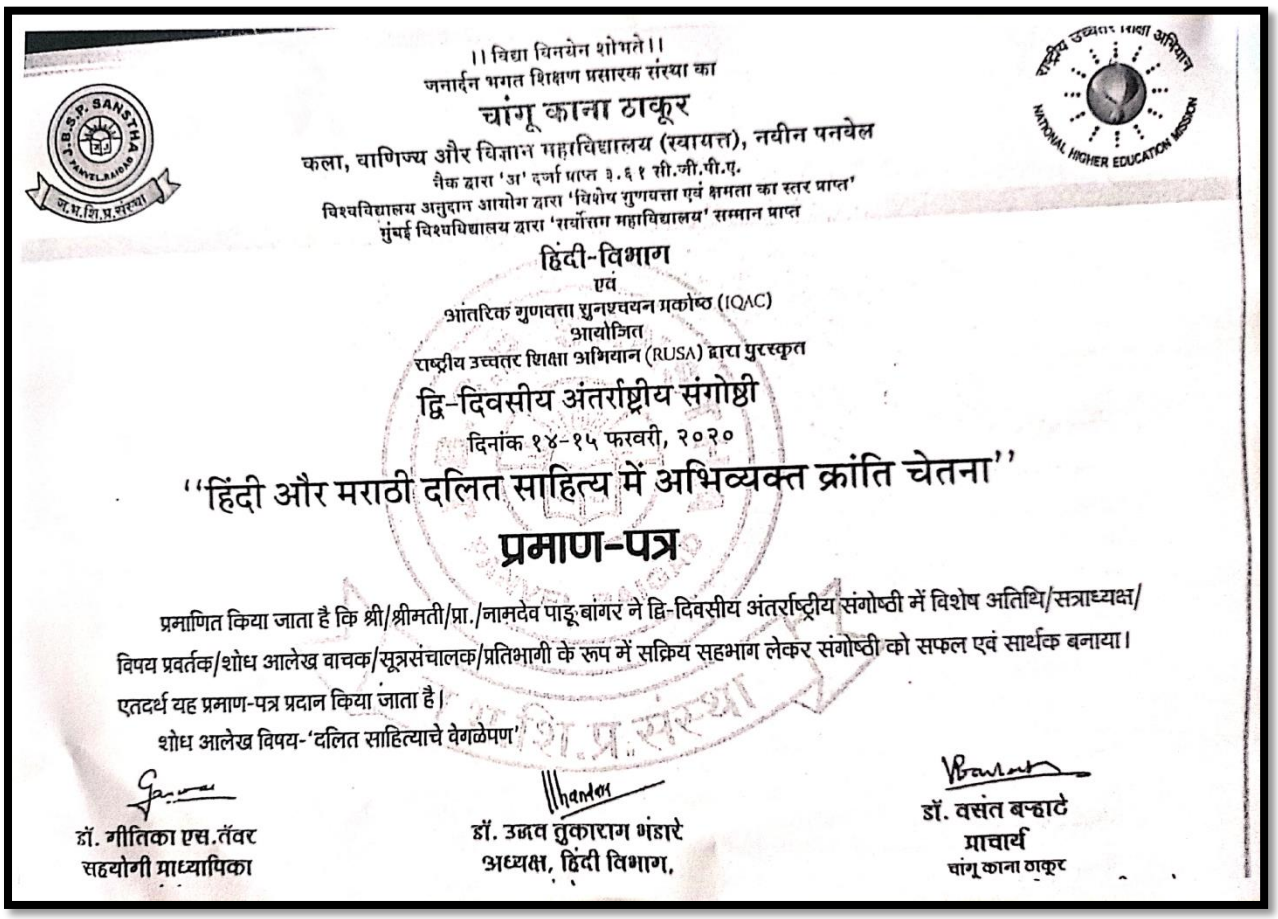

।। विद्या विनयेन शोभते ।।
जनार्दन भगत शिक्षण प्रसारक संस्था का
चांगू काना ठाकूर
कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त), नवीन पनवेल
नैक द्वारा 'अ' दर्जा प्राप्त ३.६१ सी.जी.पी.ए.
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'विशेष गुणवत्ता एवं क्षमता का स्तर प्राप्त'
मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा 'सर्वोत्तम महाविद्यालय' सम्मान प्राप्त

हिंदी-विभाग
एवं
आंतरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)
आयोजित
राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) द्वारा पुरस्कृत

द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
दिनांक १४-१५ फरवरी, २०२०

''हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त क्रांति चेतना''

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/प्रा./नामदेव पांडू बांगर ने द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष अतिथि/सत्राध्यक्ष/विषय प्रवर्तक/शोध आलेख वाचक/सूत्रसंचालक/प्रतिभागी के रूप में सक्रिय सहभाग लेकर संगोष्ठी को सफल एवं सार्थक बनाया। एतदर्थ यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

शोध आलेख विषय-'दलित साहित्याचे वेगळेपण'

डॉ. गीतिका एस.तंवर
सहयोगी प्राध्यापिका

डॉ. उत्तम तुकाराम भंडारे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

डॉ. वसंत बन्हाटे
प्राचार्य
चांगू काना ठाकूर

DVV 3.3.2 Research publication and Award

हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त क्रांति चेतना

संपादक

डॉ. उद्धव तुकाराम भंडारे

सह-संपादक

डॉ. हूबनाथ पाण्डेय
डॉ. अर्जुन घरत
डॉ. गीतिका तँवर
प्रा. मारुती कांबळे

विद्यापीठ प्रकाशन
(ओ.पी.सी.) प्रा.लि.

विद्यापीठ प्रकाशन
(ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग,
विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
ISBN : 978-93-89925-01-2

मूल्य: ₹ 200/-

Hindi Aur Marathi Dalit Sahitya mein Abhivyaktya Kranti Chetana

Edited By : Dr. Udhav Tukaram Bhandare

भारत में मुद्रित

विद्यापीठ प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा.लि.
न्यु कलईवाला, शहाजी राजे मार्ग, विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - 400057
दूरभाष: 9987478404/9869341047
ई-मेल: vidyapeethprakashan@gmail.com
क्रियेटिव पारस प्रिंटर्स, लोअर परेल, मुंबई

अंतरष्ट्रीय सलाहकार समिति

माननीय प्रोफेसर. डॉ. वसंत बन्हाटे
प्राचार्य
चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान
महाविद्यालय(स्वायत्त), नवीन पनवेल

माननीय डॉ. जोगेंद्रसिंग मोतीसिंग बिसेन
उप-कुलपति,
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

माननीय डॉ. जयप्रकाश कर्दम
प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार
इन्दरगढ़ी, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश

डॉ. शरणकुमार निंबाळे
प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार, पुणे

प्राचार्य डॉ. जाधव रावसाहेब मोहनराव
अध्यक्ष
हिन्दी अध्ययन मंडल स्वा.रा.ती.म.वि. नांदेड

प्रोफेसर डॉ. रतनकुमार पाण्डेय
भूतपूर्व हिन्दी-विभाग प्रमुख
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. अनिल सिंह
अधिष्ठाता, मानवविद्या संकाय,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. मनप्रीत कौर
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
गुरुनानक महाविद्यालय, जी.टी.वी. नगर

डॉ. कुरे रमेश संभाजी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
नारायणराव वाघमारे महाविद्यालय, हिंगोली

माननीय प्रोफेसर डॉ. सुहास पेडनेकर
उप-कुलपति
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

माननीय डॉ. निलांती कुमारी राजपक्षा
श्री जयवर्धनेपुरा विश्वविद्यालय, श्रीलंका

माननीय डॉ.संजय जगत जगताप
संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षण
कोकण विभाग, महाराष्ट्र

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, लातूर

डॉ. अर्जुन जानू घरत
भूतपूर्व हिन्दी-विभाग प्रमुख
महात्मा फुले कला, विज्ञान और वाणिज्य
महाविद्यालय, पनवेल

डॉ. अर्जुन चव्हाण
हिन्दी विभाग, कोल्हापुर विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

डॉ. परिहार सुजीतसिंग एस.
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
डि.एस.एम.महाविद्यालय, हिंगोली

डॉ. हूबनाथ पाण्डेय
प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. दिलीपकुमार कालीदास मेहरा
हिन्दी विभाग,
स.प. विश्वविद्यालय, बल्लभ विद्यानगर, गुजरात

प्रकाशन विवरण

प्रकाशन का स्थान	चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय(स्वायत्त), नवीन पनवेल
प्रिंटर का नाम	विद्यापीठ प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा.लि., २, न्यू कलईवाला चाल, शाहाजी राजे मार्ग, विलेपार्ले, ईस्ट, मुंबई-४०००५७
राष्ट्रीयता	भारतीय
प्रकाशन का नाम	प्राचार्य, प्रोफेसर. डॉ. वसंत बन्हाटे
पता:	चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय(स्वायत्त), नवीन पनवेल एवं विद्यापीठ प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा.लि., २, न्यू कलईवाला चाल, शाहाजी राजे मार्ग, विलेपार्ले, ईस्ट, मुंबई-४०००५७
संपादन	डॉ. उद्धव तुकाराम भंडारे
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता .	चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय(स्वायत्त), प्लॉट नं.१, सेक्टर-११, खांदा कॉलोनी, नवीन पनवेल, जि-रायगड-पिन-४१०२०६
स्वामित्व	चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय(स्वायत्त), नवीन पनवेल

2 * हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त क्रांति चेतना

- भूमि-प्रश्न और हिंदी दलित साहित्य में क्रांति चेतना — ९७
  विशाल कुमार
- हिन्दी और मराठी साहित्य में दलित विमर्श — ९८
  डॉ.रावसाहेब जाधव
- डॉ. जयप्रकाश कर्दम के कहानी संग्रह 'तलाश' में क्रांति चेतना — ९९
  रीता कुमारी देवरा
- शिकंजे का दर्द: आत्मकथा में क्रांति चेतना — १००
  श्रीमती. पूनम तानाजी सुर्वे
- दलित साहित्य की प्रेरणा : शाहू महाराज का योगदान — १०१
  उत्कर्षा संभाजी पोवार
- मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' में क्रांति चेतना — १०२
  शीला वर्मा
- दलित साहित्य की प्रेरणा महात्मा ज्योतिबा फुले का योगदान — १०३
  शिल्पी सुमन प्रकाश
- दलित क्रांति चेतना का दस्तावेज: जूठन — १०४
  डॉ.गिरीश चन्द्र पाल
- नरेंद्र जाधव की आत्मकथा 'आमचा बाप आन् आम्ही' में अभिव्यक्त क्रांति चेतना — १०५
  डॉ. माधुरी जोशी
- दलित साहित्य : रुदन, आक्रोश, विद्रोह एवं संकल्प के स्वर — १०६
  डॉ. मनप्रीत कौर
- जयप्रकाश कर्दम के 'खरोंच' कहानी संग्रह में अभिव्यक्त क्रांति चेतना — १०७
  आरती
- दूधनाथ सिंह की कविताओं में दलित क्रांति चेतना — १०८
  अनन्त द्विवेदी
- दलित साहित्य की प्रेरणा : भारतीय संविधान का योगदान — १०९
  डगळे अनिल निवृत्ती
- अर्जून डांगळे : छावणी हलते आहे काव्यसंग्रह में क्रांति चेतना — ११०
  कैप्टन डॉ. अनिता शिंदे
- दलित साहित्याचे वेगळेपण — १११
  प्रा.नामदेव पांडू बांगर
- गुजराती साहित्य में दलित चेतना — ११२
  डॉ. हेतल पी. बरोट

दलित साहित्याचे वेगळेपण

प्रा.नामदेव पांडू बांगर

दलित साहित्याच्या निर्मितीमागचा हेतू केवळ मनोरंजन दिसणार नाही. दलित साहित्याचा विचार केला तर ईश्वर, आत्मा, अध्यात्म, वर्ण आणि जातीव्यवस्था यांना प्रामुख्याने नाकारते आहे. तसेच हिंदू परंपरामध्ये असणाऱ्या रुढी, वाईट चालीरिती यांच्याविरुध्द बंड पुकारतांना दिसते. हा विचार डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शिकवणूकीमधून आलेला आहे. त्यांनी दलितांना बलुतेदारी सोडून स्वतंत्र जीवन जगण्याचा उपदेश केला. मानवमुक्ती, स्वातंत्र, समता, बंधुता व न्याय यांचा पुरस्कार केला. दलितांच्या मनात आत्मसन्मान, आत्मविश्वास, आत्मावलंबन यांची जाणीव करुन दिली. परंपरा पोथीनिष्ठता परमेश्वरविषयक कल्पना यांना नकार देण्यास सांगितले.

बहुतांश दलित लेखक हे कार्यकर्ते होते. परिवर्तनाचा विचार त्यांनी स्वीकारला होता. समाज्यामध्ये परिवर्तनाचे कार्य कथा, कादंबरी, कविता यांच्यामाध्यमांतून मांडत असत. बाबूराव बागूल यांच्या कथेचा विचार जर केला तर त्यांच्या कथेमध्ये वास्तवाचा आधार आहे. समाजामध्ये असलेले प्रश्न त्यांनी उपस्थित केले. या लेखकांनी टिकाकाराचे भय बाळगले नाही. स्व:ताची भूमिका त्यांनी तयार केली होती. त्यावर त्यांची निष्ठा आहे. जात माणसिकतेने भरकटला आहे. शिवराळ भाषेमध्ये त्यांनी लेखन केले. दया पवार यांनी बलुंद आत्मचरीत्रामधून अवघ्या ४० व्या वर्षी जातीव्यवस्थेने आमच्यावर जीवन लादले आहे. त्याचप्रमाणे दया पवार यांनी बलुंद या आत्मचरीत्रामधून भारतीय समाजाला गुन्हेगारीच्या पिंज्रयामध्ये उभा केला आहे. जो प्रत्यक्ष जगतो आहे हे त्याचे दु:ख जातीशी निगडीत आहे. व्यक्तिगत दु:ख नाही तर सामाजिक दु:ख आहे. हे जीवन जगतो आहोत. याची आम्हाला लाज वाटायची कारण काय? असा प्रश्न दया पवार व्यवस्थेला विचारत आहेत. ही प्रेरणा आंबेडकरी विचारांची आहे. शेकडो हजारो वर्षे पिढ्यानपिढ्या सोसत आलेल्या, दैन्य, दु:ख, अन्याय, अत्याचार यापासून समाजाला मुक्त करण्यासाठी संघर्षसिध्द झालेल्या समाजाचा उद्गार म्हणजे दलित साहित्य।

मराठी विभाग प्रमुख
जनसेवा फौंडेशन संचलित कला व वाणिज्य महाविद्यालय शेंडी(भंडारदरा)
ता. अकोले, जि. अहमदनगर

Mere path pradarshak

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे से संलग्न तथा
अहमदनगर जिला मराठा विद्या प्रसारक समाज द्वारा संचालित

न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइन्स कॉलेज, अहमदनगर-414001 (महाराष्ट्र)

स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
हिंदी और देवनागरी लिपि

रविवार दि. 2 फरवरी, 2020

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रा. / डॉ. / श्री. / श्रीमती ......Dr. Sheela Mahadu Ghule......
महाविद्यालय ...—...... ने
रविवार दिनांक 2 फरवरी, 2020 को **हिंदी और देवनागरी लिपि** विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि / विशेषज्ञ / सत्राध्यक्ष / विषय प्रवर्तक / आलेख वाचक / प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया ।

डॉ. लीना मेहेंदळे (आइ.ए.एस)	प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख	डॉ. हनुमंत जगताप	डॉ. भास्कर झावरे
पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी संरक्षक, नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली	उपाध्यक्ष, नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली	अध्यक्ष, हिंदी विभाग तथा सदस्य, हिंदी अध्ययन मंडल, सा.फु.पुणे विश्वविद्यालय, पुणे	प्राचार्य

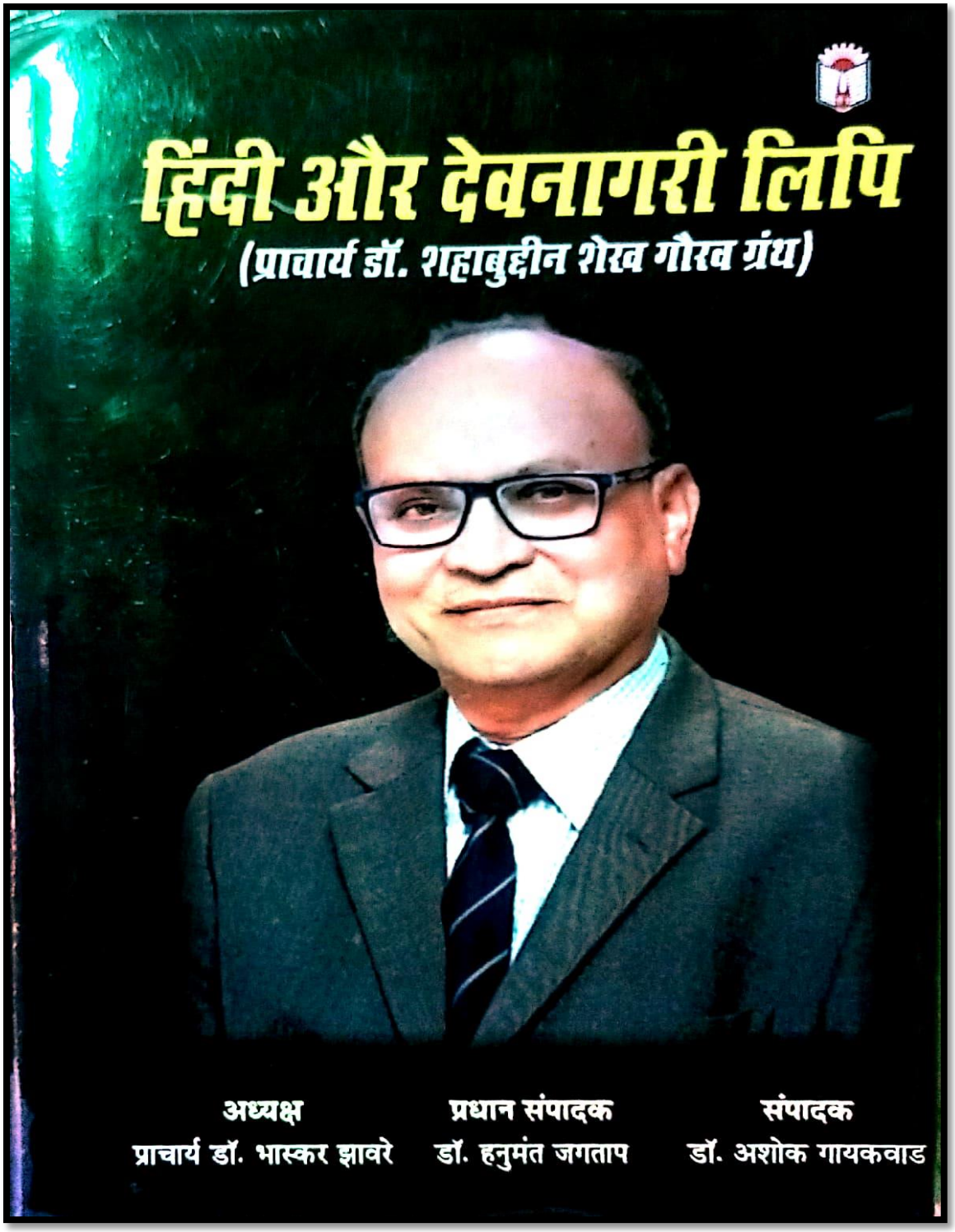
हिंदी और देवनागरी लिपि
(प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख गौरव ग्रंथ)
अध्यक्ष
प्राचार्य डॉ. भास्कर झावरे
प्रधान संपादक
डॉ. हनुमंत जगताप
संपादक
डॉ. अशोक गायकवाड

ISBN : 978-93-80788-91-3

पुस्तक	:	हिंदी और देवनागरी लिपि (प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख गौरव ग्रंथ)
अध्यक्ष	:	प्राचार्य डॉ. भास्कर झावरे
प्रधान संपादक	:	डॉ. हनुमंत जगताप
संपादक	:	डॉ. अशोक गायकवाड
प्रकाशक	:	**शैलजा प्रकाशन** 57पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर-208011 (उ मो. 8765061708, 9451022125 Email : shailjaprakashan@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 2020
मूल्य	:	1095.00 (एक हजार पंचानबे रुपये मात्र)
मुख्यपृष्ठ	:	गौरव शुक्ला
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

46. डॉ. शहाबुद्दीन शेख सर : एक आदर्श व्यक्तित्व — 194
डॉ. मेदिनी अंजनीकर

47. डॉ. शहाबुद्दीन शेख : एक असाधारण व्यक्तित्व — 197
डॉ. अरुणा हिरेमठ

48. डॉ. शहाबुद्दीन शेख : सदाबहार व्यक्तित्व के धनी — 198
डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर

49. एक आदर्श प्राध्यापक : डॉ. शहाबुद्दीन शेख — 199
डॉ. अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अजीज

50. मितभाषी, मधुरभाषी, मृदुभाषी.... — 201
डॉ. सुनीता यादव

51. डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी के जीवन के विविध पहलू — 204
डॉ. बाळासाहेब बाचकर

52. मेरे पथप्रदर्शक — 207
डॉ. शीला महादू घुले

53. आदरणीय गुरुवर्य डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख — 209
डॉ. जयश्री अर्जुन माथेसुळ

54. डॉ. शहाबुद्दीन शेख में झलकता मानवतावादी दृष्टिकोण — 212
डॉ. एफ. मस्तान शाह

55. आमचे सन्मित्र : निगर्वी प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख — 216
प्राचार्य डॉ. अशोकराव शिंदे

56. प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख : एक अष्टपैलू व्यक्तीमत्व — 219
डॉ. अब्दुल समद शेख

57. प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख : शिष्य ते गुरुवर्य एक वाटचाल — 222
शेख जब्बार खलील

58. माझ्या स्मृतीतील डॉ. शहाबुद्दीन शेख — 231
डॉ. रुपाली चौधरी

52
मेरे पथप्रदर्शक

डॉ. शीला महादू घुले (लोनी, अहमदनगर)

"गुरूर्ब्रम्हा गुरूर्विष्णुः गुरूदैवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रम्ह तस्मै श्रीगुरवे नमः।।"

गुरू शब्द 'गु' और 'रू' शब्द से मिलकर बना है। 'गु' का अर्थ अन्धकार और 'रू' का अर्थ प्रकाश होता है। यानि जो हमें अन्धकार से प्रकाश की और ले जाऐ वही गुरू है।

माता–पिता हमें जन्म देते है उनका हमारे जीवन में अनन्य साधारण महत्व है उसी प्रकार गुरू का भी हमारे जीवन में अनन्य साधारण महत्व है। गुरू की महिमा इतनी अपरम्पार है कि, उन्हें तो भगवान से भी बडा कहा गया है। इसका कारण शायद यह है कि, भगवान है इस बात का बोध गुरू ही करवाते है जीवन में दुःख मुक्ति के लिए गुरू का होना जरूरी है।

"जो समाज गुरू द्वारा प्रेरित है वह अधिक वेग से उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है" – विवेकानन्द

कहते हैं कि भगवान को किसीने देखा नहीं है पर मैंने अपने भगवान को देखा है परखा है। अगर कोई व्यक्ति किसी के जीवन को नई दिशा देने में योगदान दे उसे मार्गदर्शन करें तो वहीं व्यक्ति उसके लिए भगवान से कम नहीं है।

मेंरे दिशाहीन जीवन को दिशा देने का काम मेरे परम गुरूवर्य डॉ. शहाबद्दीन शेख जी ने किया है। मेरा और मेरे गुरूवर्य का परिचय पद्मश्री विखे पाटील आर्टस्, साइन्स और कॉमर्स महाविद्यालय, प्रवरानगर में हुआ। महाविद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यकम के लिए श्री ज्ञानेश्वर महाविद्यालय, नेवासा के हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी को अतिथि अध्यापक के तौर पर अनुवाद विज्ञान पढाने के लिए आमंत्रित किया गया था। उनका सादा, सरल स्वभाव, मितभाषी, सत्यप्रियता, अनुशासनप्रियता, नियमितता आदि गुणों से हम सभी छात्र प्रभावित हो गये थे। इसी कारण हमारी 'अनुवाद विज्ञान' इस विषय में रुचि और बढ़ी। हम सभी छात्रों को ज्ञानदान के साथ–साथ उन्होंने जीवन दिशा देने का भी काम किया है। हम सभी छात्रों से उनके मित्रता पूर्ण

संबंध थे। उनके व्याख्यान में उच्चारण शैली, वाक्यगठन एवं अभिव्यक्तिकरण शैली के माध्यम से सबके दिलो दिमाग पर छाए रहे। हम छात्रों को उनका साथ सप्ताह में दो दिन का रहता था पर जितना भी रहता था उतना बहुत था। वो ज्ञान रूपी वर्षा हम पर करते थे और उस ज्ञान रूपी वर्षा में हम मुक्त रूप से भीगते थे। हमारी शंकाओं का हमेशा उन्होंने समाधान किया है। हम सभी छात्रों के लिए वें एक आदर्श गुरू ही रहे हैं।

एक सामान्य छात्रा होने के नाते मैंने भी उनके संपर्क में आकर बहुत कुछ हासिल किया है। उनकी अध्यापन शैली के माध्यम से मेंने बहुत कुछ ग्रहण किया है। महाविद्यालय से विदा होने के बाद मैंने अपनी निजी जिंदगी की शुरूवात की परंतु कुछ दिनों बाद ही असफल रहीं। इस कारण मेरा मन विचलित हो उठा था। उसी दौरान डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी से मेरा पुनः संपर्क हुआ था। उन्होंने मेरे विचलित मन को स्थिरता देने के लिए तथा मेरे जीवन को एक नई दिशा देने के लिए बहुत प्रयत्न किये। जीवन भर मैं उनकी ऋणी रहूँगी।

दिया ज्ञान का भण्डार हमें/किया भविष्य के लिए तैयार हमें
हैं आभारी उन गुरूओं के हम/जो किया कृतज्ञ अपार हमें
मेरे जीवन में आनेवाले/डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी को
मेरा शत शत नमन।

आज मैं डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी के मार्गदर्शन में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय से 'डॉ. रामनिवास 'मानव' का हायकु काव्य : संवेदना एवं शिल्प' विषय पर पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हुई।

उनके साथ मुझे कई बार संगोष्ठी ने जाने का भी मौका मिला तथा दिल्ली की यात्रा भी सफल रहीं। विविध यात्राओं के दौरान कई लेखकों को मिलने का मौका प्राप्त हुआ तथा अपने देश के विविध प्रांतों में जाने का सुअवसर मिला। नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली से जुडने का मौका भी उन्हीं की वजह से मिला। नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित देवनागरी लिपि निबंध स्पर्धा में दो बार मुझे सम्मानित होने का मौका मिला तथा उनके मार्गदर्शन से मानव संसाधन मंत्रालय, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की ओर से शोध छात्र यात्रा अनुदान प्राप्त हुआ। डॉ. शहाबुद्दीन शेख जी हमेशा मेरे पथप्रदर्शक रहे हैं।

संपर्क सूत्र :
शोधछात्रा,
डॉ.बा.आं.मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद
मो. 9049165626

Annabhausatheyanchy asahityatilstrichitran

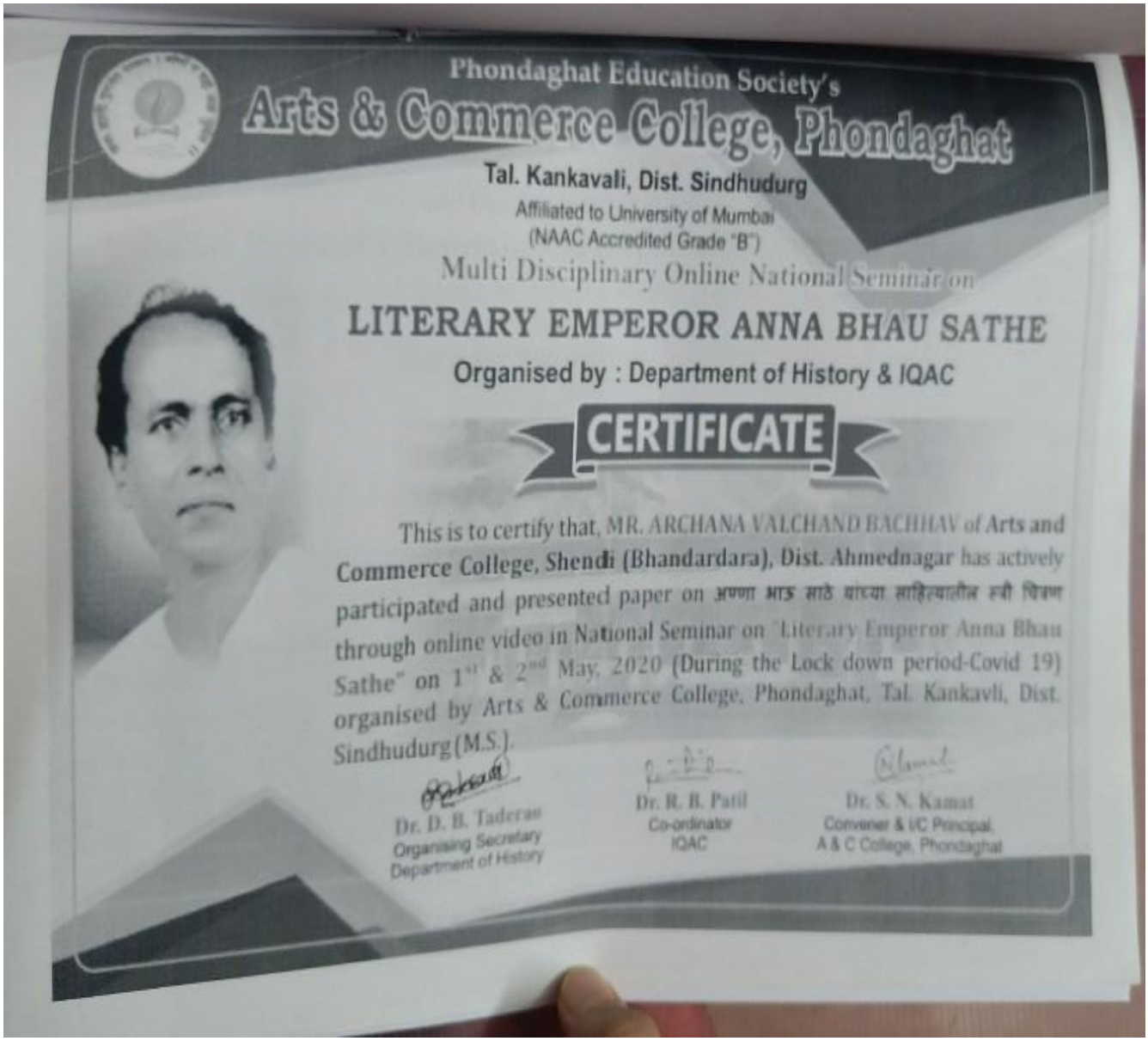

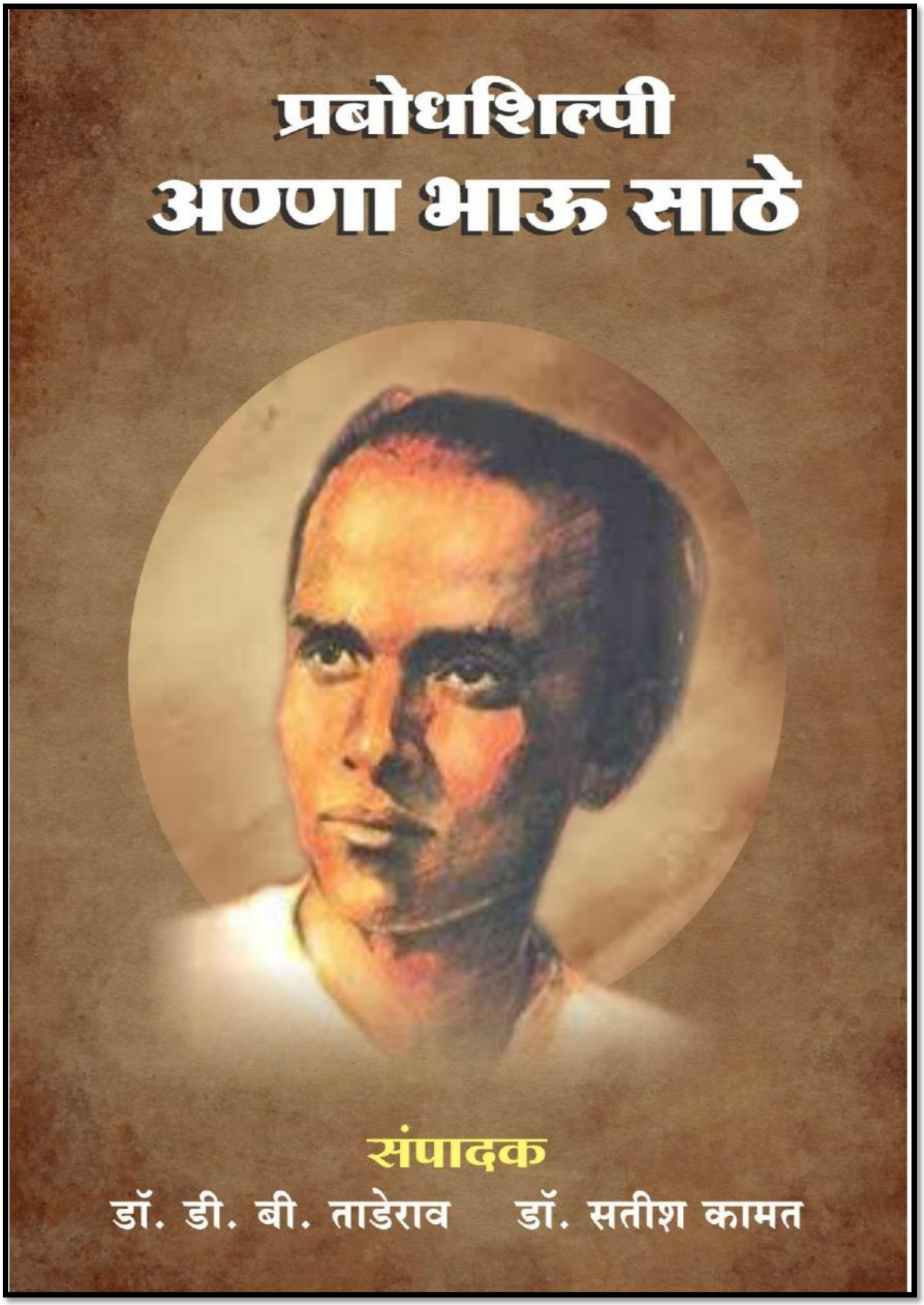
प्रबोधशिल्पी
अण्णा भाऊ साठे
संपादक
डॉ. डी. बी. ताडेराव
डॉ. सतीश कामत

प्रबोधशिल्पी

अण्णा भाऊ साठे

-: संपादक :-

डॉ. डी. बी. ताडेराव
इतिहास विभाग प्रमुख
कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय,
फोंडाघाट, जि. सिंधुदुर्ग

डॉ. सतीश कामत
प्र. प्राचार्य व मराठी विभाग प्रमुख
कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय,
फोंडाघाट, जि. सिंधुदुर्ग

शिवानी प्रकाशन, पुणे

प्रबोधशिल्पी अण्णा भाऊ साठे

Prabodhshilpi Anna Bhau Sathe

संपादक

डॉ. डी. बी. ताडेराव, डॉ. सतीश कामत

© **सर्व हक्क सुरक्षित**

प्रथमावृत्ती

०१ जून २०२०

प्रकाशक

शिवानी प्रकाशन,

हडपसर, पुणे.

मोबा. 9011320659

ISBN- 978-93-85426-56-8

मुखपृष्ठ व अक्षरजुळणी

श्री. संतोष राणे, कणकवली

किंमत

४००/-

(सदरील संपादित ग्रंथात व्यक्त झालेल्या विचार व मजकुराशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतील असे नाही)

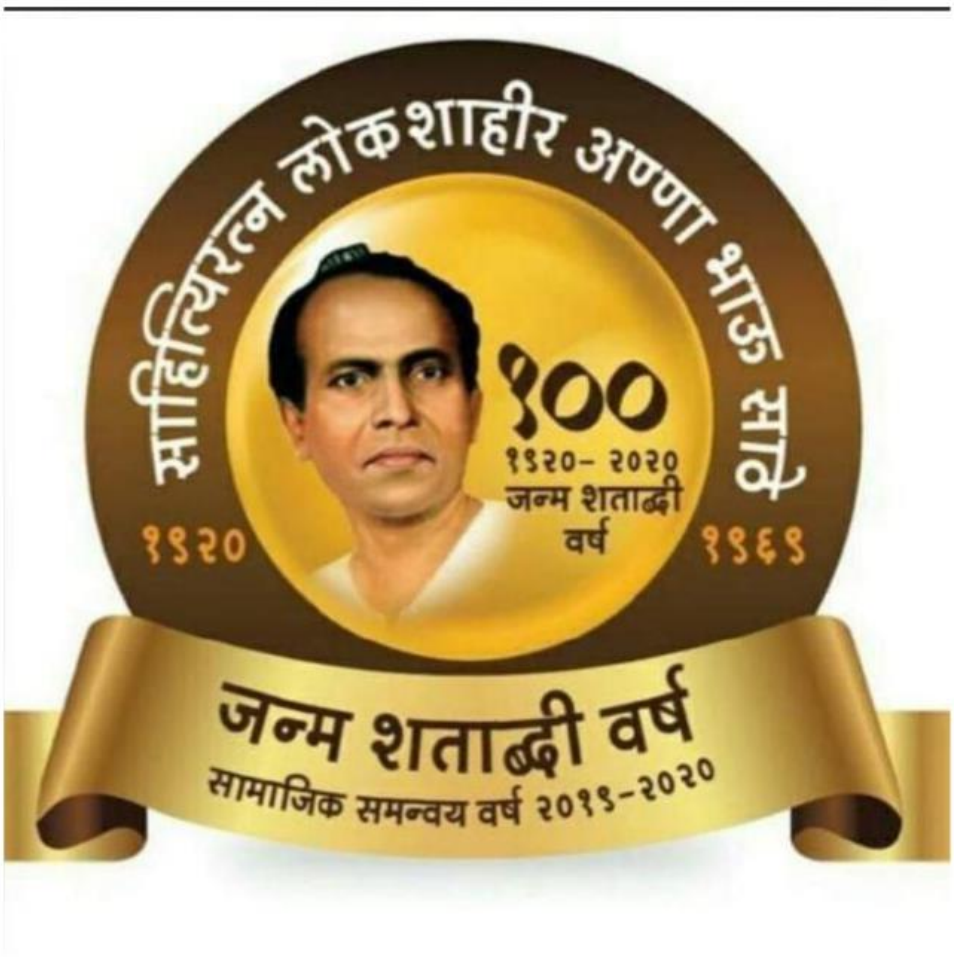

साहित्य सम्राट अण्णा भाऊ साठे यांच्या

जन्मशताब्दी वर्षानिमित्त

विनम्र अभिवादन!

* कृतज्ञता *

मा. श्री. श्रीकांत आपटे
(चेअरमन, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. मनीष गांधी
(सचिव, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. समीर मांगले
(खजिनदार, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. यशवंत मोदी
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. मोहन मोदी
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. रमेश भोगटे
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. संजय आग्रे
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. राजन चिके
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. आनंद मर्ये
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. अविनाश सापळे
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. राजेंद्र पावसकर
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. हेमंत रावराणे
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. सुभाष सावंत
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. गणपत वळंजू
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. सुंदर पारकर
(सदस्य, फोंडाघाट एज्युकेशन सोसायटी)

मा. श्री. विजय सावंत
(सदस्य, महाविद्यालय विकास समिती)

मा. श्री. संतोष पावसकर
(सदस्य, महाविद्यालय विकास समिती)

मा. डॉ. शिलेंद्र आपटे
(सदस्य, अंतर्गत गुणवत्ता निर्धारण कक्ष)

मा. डॉ. हेमंत काळगे
(सदस्य, अंतर्गत गुणवत्ता निर्धारण कक्ष)

मा. श्री. पंढरीनाथ गुरव
(सदस्य, अंतर्गत गुणवत्ता निर्धारण कक्ष)

मा. श्री. सचिन नारकर
(सदस्य, अंतर्गत गुणवत्ता निर्धारण कक्ष)

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	शीर्षक	पृ. क्र.
१	**दृष्टी व्यापक करणारा लेखक अण्णा भाऊ साठे** डॉ. गिरीश मोरे, कोल्हापूर	१६
२	**अण्णा भाऊ साठे यांची शाहिरी – इतिहासाची मुसाफिरी** डॉ. सोमनाथ डी. कदम	२२
३	**अण्णा भाऊ साठे लिखित स्तालिनग्राडचा पोवाडा : ऐतिहासिक मूल्यांकन** डॉ. शितल पंचीकर	२९
४	**अण्णाभाऊ साठे यांचे क्रांतिकारक सामाजिक कार्य** डॉ. पठाण झेड. ए.	३५
५	**थोर आंबेडकरवादी साहित्यसम्राट : अण्णा भाऊ साठे** डॉ. सतीश कामत	४०
६	**अण्णा भाऊ साठे यांची क्रांतिकारी शाहिरी** डॉ. रघुनाथ केंगार	४७
७	**अण्णा भाऊ साठे यांचे संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील योगदान** डॉ. नितेश सुरवसे	५३
८	**अण्णा भाऊ साठे यांचे कथालेखन** डॉ. भाऊसाहेब मुरलीधर नन्नवरे	५८
९	**साहित्यरत्न अण्णा भाऊ साठे : अष्टपैलू व्यक्तिमत्व** डॉ. बळीराम गायकवाड	६३
१०	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे यांची शाहिरी, पोवाडे व वगनाट्ये : एक अभ्यास** डॉ. स्वाती रामराव सरोदे	६७
११	**अण्णा भाऊ साठे यांचे संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील योगदान** डॉ. राजेंद्र आत्माराम मुंबरकर	७१
१२	**अण्णा भाऊ साठे व कामगार चळवळ** डॉ. उर्मिला क्षीरसागर	७७
१३	**अष्टपैलू लोकनेते अण्णा भाऊ साठे यांचे संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील योगदान : एक ऐतिहासिक अभ्यास** डॉ. वंदना राजेश शिंदे	८२

१४	**आण्णा भाऊ साठे यांचे ऐतिहासिक पोवाडे** डॉ. सुरेश विठ्ठलराव पाथरक, डॉ. संभाजी सोपानराव दराडे	८९
१५	**सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य आणि पत्रकारिता** डॉ. नितीन रणदिवे	९४
१६	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या लोकनाट्यातील सामाजिक प्रश्न** डॉ. मोहन गोविंद लोंढे	९६
१७	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातून प्रकटणारे समाज जीवन** डॉ. डी. आर. गायकवाड	१०१
१८	**बरबाद्या कंजारी कथासंग्रहातील आंबेडकरवादी विचारधारा** डॉ. सुशीलप्रकाश यादवराव चिमोरे	१०८
१९	**अण्णा भाऊ साठे यांचे संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील योगदान** प्रा. रसाळ दशरथ रसाळ	११९
२०	**अण्णा भाऊ साठे एक बहुमुखी व्यक्तित्व** डॉ. प्रविण पांडूरंग घोडविंदे	१२४
२१	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या कथात्म साहित्याचे लोकतत्त्वीय अध्ययन** डॉ. नीला जोशी	१३०
२२	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील वर्गीय जाणीवा** डॉ. मारोती तेगमपुरे	१३६
२३	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या सहित्यातील सामाजिक दृष्टीकोन** डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	१४३
२४	**साहित्य सम्राट अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्यांवरील चित्रपट** प्रा. हमीद उमरअली काझी	१५०
२५	**अण्णा भाऊ साठे यांचे वाड.मयीन जीवन** डॉ. गणपत गट्टी	१५९
२६	**साहित्यसम्राट अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील इतिहासाचे अवलोकन** डॉ. किशोर जोगदंड	१६२
२७	**अण्णा भाऊ साठे यांचा कामगार विषयक दृष्टिकोन** प्रा. मिलिंद बाबूराव थोरात	१६९
२८	**अण्णा भाऊ साठे व कैफी आझमी – जनतेचे कलावंत** प्रा. प्रकाश नाईक	१७३

२९	**आण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील समाज** डॉ. सुनिल सुखदेव लोखंडे	१७९
३०	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या कथांमधील समाजदर्शन** डॉ. वर्षा शिरीष फाटक	१८३
३१	**आण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबरीतील स्त्री पात्रांचा विविधांगी अभ्यास** डॉ. लक्ष्मण गीते	१९०
३२	**अण्णा भाऊ साठे यांचे कथासाहित्य आणि समकालीन वास्तव** डॉ. भूषण ज्ञानदेव काटे-पाटील	१९४
३३	**अण्णा भाऊ साठे : एक थोर साहित्यिक** डॉ. विद्या शरद मोदी	१९९
३४	**अण्णा भाऊ साठे : आजरामर साहित्याचा निर्माता** डॉ. शेख शहाजहान बशीर	२०५
३५	**अण्णा भाऊ साठे : एक प्रभावी व्यक्तिमत्व** डॉ. अर्चना टाक	२०८
३६	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री चित्रण** शेख समरिनबेगम इब्राहिम	२११
३७	**अण्णा भाऊ साठे : एक बहुआयामी व्यक्तीमत्व** डॉ. राजेंद्र यादवराव बारसागड	२१६
३८	**अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील स्त्री जीवन** डॉ. महादेव सदाशिव डीसले	२२१
३९	**अण्णाभाऊ यांची लोकनाट्ये : समाज जागृतीचे ऐतिहासिक कार्य** अजयकुमार प्रल्हाद लोखंडे	२२७
४०	**अण्णा भाऊ साठे यांचा सामाजिक आणि आर्थिक दृष्टिकोन** प्रा. सुर्यकांत प्रभाकर माने, सौ. ईशा जगदीश गोताड	२३२
४१	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील आंबेडकरी विचारांची प्रासंगिकता** डॉ. कहाळेकर सी. एम.	२४०
४२	**अण्णा भाऊ साठे यांचे समाज कार्य** डॉ. अतुल पद्माकर खोसे	२४८
४३	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री चित्रण** श्री. रमेश विठ्ठलराव शेळके	२५१

४४	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील सामाजिक विद्रोह तथा साम्यवादी विचार** डॉ. धिरजकुमार नजान	२५५
४५	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्याचे स्वरूप** डॉ. गजानन अनंता देवकर	२६४
४६	**अण्णा भाऊ साठे आणि संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ** प्रा. एस. एन. पाटील	२६८
४७	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील मुंबई नगरी** डॉ. अनुप्रिया ग्रीष्म खोब्रागडे	२७३
४८	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या फकिरा कादंबरीतून प्रकट होणारी वैचारिक मूल्ये** डॉ. ढोणे कुसूम बाबूराव	२८०
४९	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबरीतील साहसाचे चित्रण** डॉ. बोरसे विनोद बाबूराव	२८४
५०	**अण्णा भाऊ साठेंचे जीवन आणि कामगार चळवळ** प्रा. राधिका सावंत	२८९
५१	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री जीवन** प्रा. चौधरी गोपाल विश्वनाथ	२९३
५२	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे व त्यांचे सामाजिक तत्वज्ञान** सौ. सरिता दशरथ देशमुख	२९७
५३	**अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य व संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन चळवळीतील योगदान** प्रा. भागवत शंकर महाले	३०४
५४	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील सामाजिक संदर्भ** डॉ. कालिदास मारुती भांगे	३१५
५५	**साहित्यरत्न अण्णा भाऊ साठे : एक चिंतन** डॉ. संजय तुकाराम वाघमारे	३२३
५६	**अण्णा भाऊ साठेंचे साहित्य समाज परिवर्तनाचे हत्यार** प्रा. किशोर शेषराव चौरे	३२९
५७	**संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीत अण्णा भाऊ साठे यांचे योगदान : एक ऐतिहासिक परिशीलन.** प्रा. सचिन अशोक धेंडे	३३५

५८	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे यांची समाजवादी विचारसरणी व लोकजागृती** प्रा. सुधाकर निळे	३४०
५९	**संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीत अण्णा भाऊ साठेंची भूमिका** डॉ. ज्ञानोबा तुकाराम कदम	३४९
६०	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री चित्रण** प्रा. अर्चना वालचंद बच्छाव	३५३
६१	**आण्णा भाऊ साठे यांचे संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील योगदान** प्रा. जगताप एच. के.	३५९
६२	**कादंबरीकार अण्णा भाऊ साठे व महानगरीय कादंबरी** डॉ. प्रशांत बा. सूर्यवंशी	३६२
६३	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री चित्रण – एक अभ्यास** प्रा. अरुणा गंगाराम पोटे	३६६
६४	**अण्णा भाऊ साठे जीवन साहित्य आणि कार्य** डॉ. सुषमा शंकरराव प्रधान– घेवंदे	३६९
६५	**मराठी साहित्यातील ध्रुवतारा – लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे** अक्षय नामदेव चव्हाण	३७४
६६	**अण्णाभाऊंच्या कादंबरीतील आवडी : एक बंडखोर नायिका** आरती केशवराव गायकवाड	३७८
६७	**क्रांतिकारी लेखक अण्णा भाऊ साठे** प्रा. सत्येंद्र राऊत	३८४
६८	**अण्णा भाऊ साठे व त्यांच्या साहित्यातील स्त्री दर्शन** डॉ. प्रगती दिनेश नरखेडकर	३८७
६९	**अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्यिक अवलोकन** प्रा. एल. एच. पंडुरे	३९०
७०	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्यातील स्त्री** डॉ. मयुर सदानंद शारब्रिद्रे	३९५
७१	**अण्णाभाऊंच्या शाहिरीतील विद्रोह** डॉ. चांदोजी सोपान गायकवाड	३९९
७२	**अण्णा भाऊ साठे – एक थोर साहित्यिक** डॉ. बाबासाहेब विठोबा माळी	४१०

७३	**अण्णा भाऊ साठे एक महान साहित्यरत्न** प्रा. कैलास सत्यवान शेलार	४१३
७४	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील विविध पैलू** श्री. कुंडलिक रामचंद्र भिंगारदेवे	४२१
७५	**कामगार रंगभूमीवरील अण्णा भाऊ साठे यांचे योगदान** प्रा. राजश्री कदम	४२३
७६	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील मार्क्सवादी प्रेरणा** प्रा. दिलीप यशवंत बर्वे	४२८
७७	**सत्यशोधक, साहित्य सम्राट, कामगारनेते अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील क्रांतिकारी साम्यवादी आर्थिक दृष्टीकोन** डॉ. देवराव सुखदेवराव मनवर	४३७
७८	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री** प्रा. विजया नितीन रणदिवे	४४६
७९	**अण्णा भाऊ साठेंचे कथात्मक साहित्य** प्रा. जगदीश पांडुरंग राणे	४४९
८०	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील आंबेडकरवादी प्रेरणा** डॉ. देविदास विक्रम हारगिले	४५४
८१	**अण्णा भाऊ साठे यांचे 'स्त्री' विषयक विचार** सौ. स्नेहलता जगदीश राणे	४५८
८२	**आण्णाभाऊंच्या कथा : मनोरंजनात्मक कि प्रबोधनात्मक एक आढावा** प्रा. दिनेश जगन्नाथ नहिरे	४६३
८३	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या निवडक साहित्यातील स्त्री चित्रण** डॉ. सोनाली संतोष कदम	४६७
८४	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील भाषिक वैशिष्ट्ये – एक अभ्यास** डॉ. रविराज अच्युत फुरडे	४७२
८५	**अण्णा भाऊ साठे यांचा आर्थिक दृष्टिकोन** प्रा. युवराज धनाजी खडके	४७९
८६	**अण्णाभाऊंच्या वैजयंता कादंबरीतील स्त्री व्यक्तिरेखा** प्रा. मल्हारी पवार	४८२

८७	**अण्णा भाऊ साठे आणि संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ** डॉ. केशव अंबादास लहाने	४९४
८८	**अण्णा भाऊ साठे यांचे कामगार चळवळीतील योगदान** सौ. स्नेहल सुरेश बेलवलकर	४९९
८९	**लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे : एक दीपस्तंभ** डॉ. मधुकर नवगिरे	५०६
९०	**अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील पर्यावरण चित्रण** डॉ. पी. डी. गाथाडे	५११
९१	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या 'आवडी' या कादंबरीतील नायिका** प्रा. सीमा हडकर	५१६
९२	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्य लेखनाच्या प्रेरणा** बेटकर वैशाली चनबस	५२०
९३	**अण्णा भाऊ साठे यांची शाहिरी : एक ऐतिहासिक अभ्यास** प्रा. सुमन लक्ष्मणराव केंद्रे	५२५
९४	**अण्णा भाऊ साठे यांची संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीतील भूमिका** डॉ. किशोर कल्लापा म्हेत्री	५३०
९५	**आण्णा भाऊ साठे यांचे ऐतिहासिक पोवाडे** प्रा. आप्पासाहेब धोंडीराम कांबळे	५३६
९६	**अण्णा भाऊ साठे – वास्तववादी लेखनातुन सामाजिक परिवर्तन** सुमीत राजू कुचेकर	५४२
९७	**साहित्यसम्राट अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्यिक योगदान** डॉ. रंजना आप्पासाहेब कमलाकर	५४६
९८	**अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील सामाजिकता** डॉ. पोळ हणमंत रामचंद्र	५५०
९९	**अण्णा भाऊ साठे उपेक्षित समाजमनाचे जननायक** प्रा. अरुण अवचितराव पाटील	५५४
१००	**स्टॅलीनग्राडचा पोवाडा : मालक व कामगार एक संघर्ष** डॉ. सविता अशोक व्हटकर	५५९

60

अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री चित्रण

प्रा. अर्चना वालचंद बच्छाव

कला व वाणिज्य महाविद्यालय शेंडी, (भंडारदरा), जि. अहमदनगर

प्रास्ताविक :

स्वातंत्र्योत्तर कालखंडात मराठी साहित्यात अनेकविध वाङमय प्रवाह निर्माण झाले आहेत. त्यामध्ये प्रामुख्याने दलित साहित्य, ग्रामीण साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य, जनवादी साहित्य इत्यादींचा उल्लेख करण्यात येतो. या वाङमय प्रवाहाच्या माध्यमातून अनेक लेखक आपले अनुभव अभिव्यक्त करू लागले. त्यामध्ये अण्णा भाऊ साठे यांचा उल्लेख करावा लागतो. अण्णा भाऊ मराठी साहित्याचा प्रवाह विस्तृत व समृद्ध केला उपेक्षितांच्या साहित्याला प्रतिष्ठा प्राप्त करून दिली समाज दर्शनाचे नवे भान मराठी साहित्याला त्यांनी दिले. भिन्नभिन्न समाजातील वर्गातील, जातीतील, गरीब व श्रीमंत अशा सर्वच पातळ्यांवर स्त्रियांची चित्रणे त्यांच्या साहित्यात आलेली आहेत. अण्णा भाऊ साठे यांनी अनेक स्त्रीप्रधान कथा, कादंबऱ्या लिहिल्या. समस्त स्त्री जातीच्या समस्यांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या नायिका विविध विषयांसह समाजासमोर उभ्या केल्या. खालील विधानावरून स्पष्ट होते. अण्णा भाऊ कम्युनिस्ट विचारांचे होते. म्हणून त्यांच्या नायिका मार्क्स, फ्रेडरिक एंगल्स, लेनिन यांच्या विचारातून स्फूर्ती घेऊन लढणार्या होत्या. या नायिका लढवय्ये आणि शीलवान स्त्रीत्वाचा गौरव करणाऱ्या, माणुसकीचा गहिवर असणाऱ्या, स्वाभिमानी आणि निष्ठावान नायिका चित्रित करणे हे अण्णाभाउंनी आपले साध्य मानले.[१] अण्णा भाऊंनी चित्रीत केलेली स्त्री काही गोष्टींमुळे असहाय्य होत असली तरी ती स्त्री नैतिक मूल्यांची जपणूक करणारी, कौटुंबिक जिव्हाळा जपणारी, दारिद्र्यात ही स्वाभिमानाने जगणारी, स्वतः स्वतःचे रक्षण करण्यास सिद्ध असणारी अशा विविध प्रकारच्या स्त्रियांची चित्रण त्यांच्या साहित्यातून अविष्कृत होतात.

उद्देश :

१. अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री व्यक्तिरेखा लेखांचा अभ्यास करणे.
२. अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील स्त्री जीवनाचे चित्रण करणे.

अण्णा भाऊ साठे यांचा स्त्रीविषयक दृष्टिकोन :

स्त्रियांना कादंबरीत मध्यवर्ती पात्र देणारे अण्णा भाऊ हे साहित्यक्षेत्रातील पहिलेच कादंबरीकार ठरतात. अण्णाभाऊंनी छत्रपती शिवाजी महाराजांचा आदर्श मानून आपल्या कादंबऱ्यांमध्ये स्त्रीला सन्मान दिला आहे. तसेच पुरुषाबरोबरीचा, सन्मानाचा व आदराचा

दर्जा दिलेला आहे. तिचं जगणं, जगण्याची धडपड, तिचे अंतकरण, तिची घालमेल, संघर्ष इत्यादींचे वर्णन केलेले आहे. अण्णाभाऊंनी कथा, कादंबऱ्यांमधून दलित जीवनाचे चित्रण केले आहे. त्यांच्या साहित्य लेखनाचे मूळ सूत्र म्हणजे माणुसकीचा विजय होय. अण्णा भाऊंनी जे अनुभवले प्रत्यक्ष डोळ्यांनी पाहिले तेच त्यांच्या लिखाणातून प्रकट झालेले आहे. त्यांचे लिखाण बहुजन दलित स्त्रियांच्या अन्यायाला वाचा फोडणारे आहे. अण्णाभाऊंनी स्त्री व्यक्तिरेखा रेखाटताना स्त्रीला कुठेही अपमानीत केले नाही. जात धर्म पंथ पाळला नाही. त्या चूल व मूल सांभाळणाऱ्या नव्हत्या. त्यांनी स्त्रियांना साहित्यातून मानाचे स्थान मिळवून दिले.

अण्णा भाऊ साठे यांच्या कथा लेखनातील स्त्री चित्रण :

अण्णा भाऊ साठे यांचे कथालेखन इतिहासातील बंडखोरी, विद्रोह घेऊन वर्तमानाला प्रेरित करणारे आणि भविष्याला दिशा देणारे आहे. वर्तमानातील दारिद्र्याला अज्ञानाला आणि विषमतेला उद्ध्वस्त करण्याचे विद्रोही तत्त्वज्ञान ते जसे कार्ल मार्क्स, गोर्की, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्याकडून स्वीकारतात तसेच इतिहासाकडून अंगीकरतात. सामाजिक जाणिवांचे व राजकीय घडामोडींचे यथार्थ चित्रण कथेत केलेले आहे. कथेतील पात्रे ही विद्रोह, वेदना, नकार व करूणा सोबत घेऊन मानवता प्रस्थापित करण्यासाठी संघर्ष करतात. अण्णा भाऊ साठे यांनी एकूण १९ कथासंग्रहाचे लेखन केलेले आहे. अण्णा भाऊ यांचे कथासंग्रह संघर्षपूर्ण, चारित्र्यवान नायक- नायिकाप्रधान आहेत. त्यांच्या कथेतील नायिका शीलवान, नीतिवान, स्वाभिमानी, जीवन संघर्षात पराजय न स्वीकारता पाय रोवून कथानक उभी करणारी आहेत. बरबाद्या कंजारी, भोमक्या, स्मशानातील सोनं, सापळा, उपकाराची फेड, विठू महार, वळण, तमाशा, मरीआईचा गाज या कथांमधून त्यांनी समाजात असणारी दरी व आजूबाजूला घडणाऱ्या गोष्टींवर सत्य लिहिले. डोळे, खेळखंडोबा, तीन भाकरी, दुर्गा, तरस, मोहाची वाट, जिव्हाळा, चंदा, भटकळ या स्त्रियांच्या विविध व्यथांवर असणाऱ्या कथा अण्णा भाऊंनी लिहिलेल्या आहेत. स्त्रीला कसे जगावे लागते याचे चित्रण केले आहे. हे करताना तिचा स्त्री स्वाभिमान शील हळुवारपणे जपलं आहे. आपल्या अनेक कथांमधून सामाजिक-राजकीय, धार्मिक, कौटुंबिक समस्यांना तोंड फोडले. स्वतंत्र बाण्याच्या बंडखोर नायिका व तळच्या जात वर्गातील लढावू नायक त्यांनी निर्माण केले. डोळे या कथेत पुरुषप्रधान संस्कृतीमध्ये भरडली जाणारी स्त्री चित्रित केलेली आहे. बरबाद्या कंजारी या कथेत जात पंचायतीला आव्हान देऊन बरबाद्या व त्याची मुलगी कशी बंडखोरी करते याचे चित्रण आहे.

अण्णा भाऊ साठे यांच्या कादंबरी लेखनातील स्त्री चित्रण :

अण्णाभाऊंच्या साहित्यातील स्त्री जीवन कसे होते याचा विचार करीत असताना आपणाला या ठिकाणी अण्णाभाऊंनी लिहिलेल्या विविध साहित्याचा विचार करणे

आवश्यक आहे. अण्णाभाऊंच्या विविध नायिकानांमध्ये उदाहरणार्थ वैजंयता, चंदन, चित्रा, आवडी, फुलपाखरू, रत्ना, मूर्ती, रूपा, मयुरा, रानगंगा, मुरळी, माकडीचा माळ, अग्निदिव्य, संघर्ष, तारा, चिखलातील कमळ, मंगला, आग, रानबोका या लक्ष वेधून घेतात.

वैजंयता (१९५९) :

वैजंयता या कादंबरीतून तमाशा कलावंत स्त्रीच्या जीवनाचे नव्हे तर सर्वच तमासगीर यांच्या जीवनाचे, त्यांना भोगावा लागणारा किळसवाणा प्रकार, स्त्री कलावंतांचे लैंगिक शोषण, आर्थिक शोषण, तमाशा, कनातीतील डांबणे या सर्व दुःखाचे चित्रण केलेले आहेत.

चंदन :

वासनेने बरबटलेल्या नजरांना पासून आपल्या अब्रूचे संरक्षण करत प्रामाणिकपणे कष्ट उपसणारी विधवा स्त्री, संपूर्ण कामगार असणार्या स्त्री प्रश्नांचे प्रतिनिधीत्व करताना दिसते. दुष्ट पुरुषांचा अन्याय, शारीरिक छळ, सूडबुद्धी या गोष्टींना आपली अब्रू सांभाळत दिलेली झुंज म्हणजे अण्णाभाऊंची 'चंदन' ही कादंबरी होय. आपल्या चारित्र्यावर घाला घालणाऱ्या कामावरील शेटजी ला जिवंत पेटवणारी चंदन ही मुख्य नायिका होय.

बाबुराव गुरव म्हणतात, की स्त्रीच्या शीलाचे पावित्र्य त्यावर खेळणाऱ्या बुभुक्षित नजरा, पडणारे डाके, शीलाच्या रक्षणासाठी स्त्रीची चालणारी दुबळी धडपड आणि त्यातून उभे राहणारे स्त्रीजीवन विषयक प्रश्नोप्रश्नांचे चंदन हे महत्त्वाचे सूत्र आहे. कामगार जगात अण्णा भाऊंनी पाहिलेली लढाऊ स्त्री अगदी जशीच्या तशी त्यांनी चित्रित केली आहे. हे त्या सूत्र पाठीमागचे कारण आहे.[२] स्त्रियांकडे पाहण्याचा पुरुषी मानसिकतेचा विकृत दृष्टिकोन नायिकेच्या माध्यमातून चित्रित केला आहे. समोर आलेल्या संकटावर कशी मात करावी याची शिकवण या कादंबरीतून मिळते.

चित्रा (१९५१) :

'चित्रा' ही वेश्याचे जीवन चित्रण करणारी कादंबरी होय. या सत्यरुपी कादंबरीतून समाज व्यवस्थेविरुद्ध बेडरपणे बंड करणारी स्त्री अण्णा भाऊ समर्थपणे चित्रित करतात. भारतीय स्त्री आपले शील दरोडेखोरांच्या टोळीत राहूनही कसे जपते याचे प्रभावी व प्रखरपणे चित्रण केलेले आहे. चित्रासारखी परिस्थितीशी झुंजणारी परंतु बळकट आशावाद असणारी खंबीर नायिका अण्णा भाऊंनी चित्रित केलेली आहे.

आवडी (टिळा लावितो मी रक्ताचा) :

जातीभेद मानणाऱ्या महाराष्ट्रात धनाजी रामोशी या आपल्यापेक्षा हलक्या जातीच्या तरुणाबरोबर राहण्याचे धाडस करणार्या आवडी चौगुले या वरच्या जातीतील मुलीची ही कहाणी आहे. आवडीचे बंड अभूतपूर्व आहे. अण्णाभाऊंची आवडी ही कादंबरी जातिभेदाच्या भिंती नष्ट करण्याचा प्रयत्न करते.

फुलपाखरू :

या कादंबरीत राजा नावाच्या तरुणाचा पुरोगामीपणाचा आदर्श चित्रित करण्यात आला आहे. रोहिणीला वेश्याचे जीवन जगण्यास भाग पाडले गेलेले आहे. हे ठाऊक असूनही तो तिच्याशी लग्न करायला तयार होतो. या कादंबरीतून अण्णा भाऊंनी फसवून कुमार्गाला लावलेल्या स्त्रियांचे पुनर्वसन झाले पाहिजे हा विचार मांडलेला आहे.

रत्ना :

देशाचे रक्षण करणाऱ्या सैनिकाच्या ग्रामीण भागात राहणाऱ्या पत्नीचे जीवन कसे सुरक्षित असते. हे रत्ना या कादंबरीत अण्णा भाऊंनी मांडलेले आहे.

मूर्ती :

'मूर्ती' ही कादंबरीची नायिका आहे. या कादंबरीचा विषय प्रेमाचा विषय आहे. दोन वर्ग मित्रांमध्ये प्रेम असल्यामुळे शेवटी मूर्ती व वसंतचे लग्न होते.

रूपा :

रूपा ही 'सर' कादंबरीची नायिका आहे. रूपा खूप देखणी असते. ती विसाव्या वर्षी लावण्यवती दिसते. त्यामुळे तिच्यासाठी गावातील अनेक तरुण वेडावतात. त्यापैकी एक गज्या होय. गज्या खलनायक असून तो वेडा होतो. रूपा मात्र आपले हृदय फक्त दिनकरलाच देते.

रानगंगा :

'प्रभावती' ही या कादंबरीची मुख्य नायिका होय. ती मल्हाराव घोलपची मुलगी असते. चंदन जाधवाचे प्रेम प्रभावती या मुलीवर असते. त्यामुळे घोलप आणि जाधव घराण्याचे वैर संपून जाते.

मुरळी :

मुरळ्या भोवती दैहिकतेचा चिखल असला तरी हृदयाने त्या चिखलातून उगवणाऱ्या कमळाप्रमाणे निर्मळ, शुद्ध व पवित्र असतात. असे या कादंबरीतून सूचित होते.

माकडीचा माळ :

भटकी डोंबाऱ्याची जमात पोटासाठी भटकते. परंतु आपले शील, आपले नाव, याला कधी गालबोट लागू देत नाही. भटक्या जमातीचे यथार्थ वर्णन 'माकडीचा माळ' या कादंबरीत अण्णा भाऊ साठे यांनी केलेले आहे.

अग्निदिव्य :

'अग्निदिव्य' ही ऐतिहासिक कादंबरी छत्रपती शिवाजी महाराजांचे सरसेनापती प्रतापराव गुजर यांचा पराक्रम व उदात्त जीवनावर आधारित आहे. या कादंबरीत अण्णा भाऊंनी नायिकेला महत्त्व प्राप्त करून दिलेले आहे. त्यांनी समकालीन विजापूरकर किंवा मोगलांशी हातात शस्त्र घेऊन निकराने लढणारी 'चंद्रा' ही नायिका चित्रित केली आहे.

संघर्ष :

ही कादंबरी भारत-पाक युद्धावर आधारित आहे. सुलभा व कृष्णाबाई या दोन स्त्रियांच्या गुणावगुणांचे चित्रण केलेले आहे. 'संघर्ष' ही कादंबरी सुलभा व आनंद यांच्या दुर्दैवी प्रेमाची कथा आहे.

मंगला :

समाजव्यवस्थेतील चुकीमुळे दुःख भोगणारी मंगला अब्रू वाचविण्यासाठी आपला जीव पणाला लावते.

चिखलातील कमळ :

ही कादंबरी मुरळीच्या जीवनावर आधारलेली आहे. तुळसा व सीता या 'चिखलातील कमळ' या कादंबरीतील मुख्य स्त्री व्यक्तिरेखा आहेत. नायिके साठी पैशापेक्षा चारित्र्य अधिक महत्त्वाचे असते. असे या कादंबरीतून सूचित होते.

मयुरा :

प्रेमापुढे सर्व नगण्य असते. असे दाखवून देणारी सुंदरी मयुरा होय. दोन स्त्रिया (शीला मुक्ता) एक पुरुष यांच्या मधला भाव दर्शविणारी ही अण्णा भाऊ साठे यांची कादंबरी होय.

रानबोका :

या कादंबरीत तमाशगीर यांच्या जीवनाचे चित्रण अण्णा भाऊ साठे यांनी केलेले आहे.

अलगुज :

रंगु आणि बापू यांच्या सफल प्रेमाची कहाणी अण्णा भाऊंनी अलगुज या कादंबरीमध्ये मांडली आहे.

अण्णा भाऊंनी कथा, कादंबरी लेखनातून स्त्री प्रश्नांवर चर्चा केलेली आहे. त्यांच्या स्त्री प्रश्नांच्या लेखनावर दृष्टिक्षेप टाकल्यास आपणास असे दिसून येते, की स्त्रीचा देखणेपणा, सौंदर्य, चांगुलपणा, दारिद्र्य, रेखीव आकर्षक चेहरा, तमाशात नृत्य करणे ही स्त्रियांच्या छळ होण्याची मुख्य कारणे आहेत. तरीही कोणत्याही समाजाची असो दलित व उच्चभू तिच्यावर अत्याचार होतात. मात्र अण्णा भाऊंनी अन्यायाशी झुंज देणारी, बंडखोर, स्वाभिमानी, सामर्थ्यशाली, धाडसी, जिवाच्या आकांताने रक्षण करणारी, त्यागी, कौटुंबिक, कर्तबगार, वास्तव जीवन जगणारी, संयमी तेवढीच आक्रमकता धारण करणारी, काळीसावळी, रांगडी तर कधी रेखीव सुंदर असणाऱ्या नायिका आपल्या कथा-कादंबरी मध्ये चित्रित केलेल्या आहेत.

थोडक्यात अण्णा भाऊंच्या साहित्यकृतीतील स्त्री व्यक्तिरेखा मूल्य जपण्याचा प्रयत्न करीत असताना दिसतात. महिलांसाठी समता प्रस्थापित करणाऱ्या विचारांचा प्रसार करण्याचा प्रयत्न म्हणजे स्त्रीवादाचा पुरस्कार अण्णाभाउंनी केलेला आहे. स्त्रियांवर

अत्याचार करणारी ही समाज व्यवस्था बदलून स्त्रियांच्या विकासाला पोषक समाजव्यवस्था निर्माण व्हावी असा विचार आपल्या साहित्यातून अण्णा भाऊंनी मांडला. अण्णा भाऊंनी स्त्री नायिकांना न्याय देण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. अण्णा भाऊ स्त्रियांच्या भावनांशी कदर करणारे साहित्यसम्राट होते. शेवटी असे म्हणावेसे वाटते की, समाजात पवित्र स्त्रिचे सन्मानपूर्वक जीवन जगू पहाणारी स्त्री अण्णा भाऊंना अपेक्षित आहे.

संदर्भ :

१. संपा. डॉ. शिवाजी जवळगेकर, जननायक अण्णा भाऊ साठे, कला अकादमी व संशोधन केंद्र, लातूर, पृ. ९४
२. गुरव बाबुराव, अण्णा भाऊ साठे : समाज विचार आणि साहित्य विवेचन, लोकवाड:मयगृह, मुंबई,
३. बजरंग कोरडे, अण्णा भाऊ साठे, साहित्य अकादमी, मुंबई
४. साठे अण्णा भाऊ, चित्रा, लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे चरित्र साधने, प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र, खंड १
५. साठे अण्णा भाऊ, तारा, लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे चरित्र साधने, प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र, खंड २
६. साठे अण्णा भाऊ, रत्ना, चंद्रकांत शेट्ये प्रकाशन, कोल्हापूर, तिसरी आवृत्ती. १९७८

INDEX

2022-23

Sr. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapter published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference National / International	Page No.
1	Dr. GhuleSheelaMahadu	Impact Of Globalization on Language and Literature	VaishwikaranAurjansancharMadyam	Impact Of Globalization on Language and Literature	Vaishwikaranka Hindi BhashaAurSahitya par Prabhav	44-52

Vaiswikaranaurj anasancharmad

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्व विद्यालय, पुणे सलंग्न
लोकनेते डॉ. बालासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का
कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं संगणकशास्त्र महाविद्यालय, आश्वी खु.
तहसील- संगमनेर, जिला- अहमदनगर, महाराष्ट्र (भारत)
NAAC Accredited B++ Grade
मराठी, हिंदी, इंग्रजी विभाग आयोजित
द्वि- दिवसीय ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय भाषा संगोष्टी
'वैश्वीकरण का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव'

Certificate

प्रमाणित किया जाता है की प्रा./डॉ./श्री./श्रीम. शिल्पा महादू घुले
ने आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अंतर्गत गुणवत्ता सिद्धता कक्ष तथा मराठी, हिंदी, अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दि. १२ तथा १३ अप्रैल २०२२ को 'वैश्वीकरण का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव' इस विषय पर आयोजित द्वि- दिवसीय ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय भाषा संगोष्टी में प्रपत्र प्रस्तोता के रूप में उपस्थित रहकर सक्रीय योगदान देने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र दिया जाता है। शोधालेख शीर्षक वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम

Ms. D. D. Tambe
Asst. Coordinator
Head, Dept. of Hindi

Mr. A. B. Shinde
IQAC, Chairman

Mr. D. D. Dabhade
Principal

Dr. R. A. Pawar
Campus Director

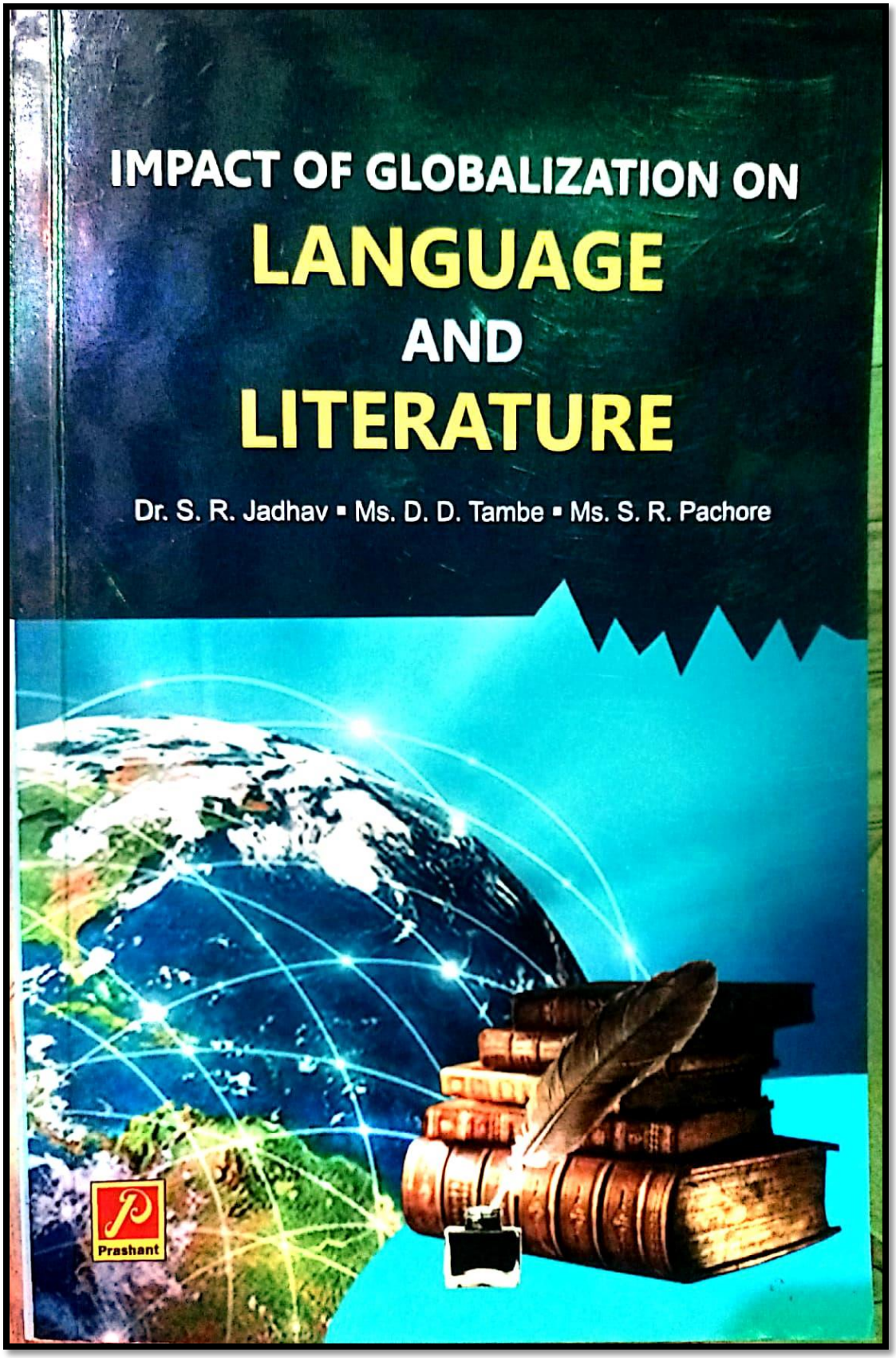
IMPACT OF GLOBALIZATION ON
LANGUAGE
AND
LITERATURE
Dr. S. R. Jadhav ▪ Ms. D. D. Tambe ▪ Ms. S. R. Pachore
Prashant

IMPACT OF GLOBALIZATION ON LANGUAGE AND LITERATURE

© Reserved

Publisher | Printer:
Rangrao A Patil (Prashant Publications)
3, Pratap Nagar, Dynaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425 001.

Phone | Web | Email:
0257-2235520, 2232800
www.prashantpublication.com
prashantpublication.jal@gmail.com

Edition | ISBN | Price
13, April 2022
978-93-94403-00-0
₹ 595/-

Cover Design | Typesetting
Prashant Publications

Prashant Publications *app for e-Books*
e -Books are available online at
www.prashantpublications.com / kopykitab.com

All rights reserved. No part of this publication shall be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (zerox copy), recording or otherwise, without the prior permission of the Author and Publishers.

Disclaimer:- The publisher/editor of the book is not responsible for errors in the contents or any consequences arising from the use of information contained in it.

27. वैश्वीकरण से प्रभावित मानवी जीवन
(उपन्यास 'उत्कोच' के विशेष संदर्भ में) 175
– डॉ. संदिप तपासे

28. वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम..... 182
– डॉ. पूनम जिभाऊ बोरसे

29. वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास –'अकेला पलाश' 188
– डॉ. सरला सुर्यभान तुपे

30. वैश्वीकरण : पर्यावरण संरक्षण तथा संवर्धण
('अभंगवाणी' के संदर्भ में...) 194
– डॉ. प्रविण मन्मथ केंद्रे

31. वैश्वीकरण की आंधी से उजडी असुर जाती 199
– प्रा. देशमुख शहेनाज अ. रफिक

32. आधुनिक परिदृश्य में संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग 204
– प्रा. अनिल उत्तम पारधी

33. वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा..... 208
– डॉ. प्रवीण तुलशीराम तुपे

34. वैश्वीकरण और हिंदी भाषा 213
– प्रा. सोनाली रामदास हरदास

35. वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम..... 216
– डॉ. शिला महादू घुले

36. 'वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर प्रभाव' 221
– प्रा. सुनील चांगदेव काकडे

37. वैश्वीकरण और हिंदी भाषा 224
– प्रा. संतोष अंबादास बावणे

38. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी और मराठी के सामाजिक
नाटकों में चित्रित जातीय संघर्ष 227
– डॉ. राहुल मराठे

39. वैश्वीकरण की परिभाषा एवं स्वरूप..... 235
– डॉ. बाळासाहेब धोंडीराम बाचकर

40. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का साहित्य 240
– डॉ. शरद कचेश्वर शिरोळे, प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे

वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम

डॉ. शिला महादू घुले
सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
जनसेवा फौंडेशन, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शेंडी, भंडारदरा (चिचोंडी),
तह. अकोले, जि. अहमदनगर

सारांश :

आज वैश्वीकरण के कारण विश्व एक दूसरे से करीब आया है। जनसंचार माध्यम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वैश्वीकरण के कारन आर्थिक, सामाजिक, राजनिति और सांस्कृतिक, व्यापार, भाषा का आदान-प्रदान, शिक्षा, अर्थ व्यवस्था, मनोरंजन आदि मै वृद्धि हो गई है। वैश्वीकरण के कारन देश के सुरक्षित सीमाओं तक आसानी से विस्तार करने की आश्चर्यजनक अवसरों को प्रदान किया है। आज जनसंचार माध्यम के कारण बाते करना, संदेश पहुंचाना आसान हो गया है। इन माध्यमों में तकनिकी का उपयोग किया जाता है। जनसंचार में अखबार, रेडियो, टेलीविजन, मासिक पत्रिका आदि आते है। जिसका प्रभाव एक साथ कई लोगों पर होता है आज वैश्वीकरण का प्रभाव जनसंचार माध्यमों पर पडा दिखाई देता है इसका उदाहरण: हम इंटरनेट ले सकते है। इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइट जैसे फेसबुक, युट्युब, टयूटर इ. उपलब्ध है। जिसका प्रभाव समाज पर सीधा पड़ता है। वैश्वीकरण के कारण भौगोलिक दूरियाँ कम हो गई है। फोन, फैक्स, कंप्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से पुरे विश्व से हम घर बैठे संपर्क कर सकते है। वैश्वीकरण मे उपभोक्तावाद तथा बाजारीकरण को बढ़ावा देने के गुण है। वैश्वीकरण के कारण शिक्षा का भी विश्वव्यापीकरण हो गया है। वैश्वीकरण के कारण आज एक देश के डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, वास्तुविद्, एकाउण्टेण्ड, प्रबन्धक, बैंकर तथा कंप्यूटर विशेषज्ञ आदि का विदेश आवागमन हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सक्रियता बढ़ गई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियोंके बढते हुए कदम से स्थानीय उद्योग बंद हो रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय पेटेन्ट कानून, वित्तीय कानून, मानव सम्पदा अधिकार कानूनों का दुरूपयोग किया जा रहा है। बेरोजगारी में वृद्धि हो गई है। जनसंचार के माध्यम से किसी घटना का विश्लेषण किया जाता है। व्यवसाय, निगम, आर्थिक व्यवस्था में वितरण प्रक्रिया में मीडिया का उपयोग किया जाता है। वैश्वीकरण के कारण जनसंचार के माध्यम से आज विश्व करीब आ गया है। मानवता, अस्मिता, संस्कृति, के बारे में पहचान हो गई है। वैश्वीकरण और जनसंचार के माध्यम परस्पर जोडनेवाला प्राणतत्व है।

प्रस्तावना :

पिछले कई सालों में वैश्वीकरण की गती बढ़ गई है जिसके परिणामस्वरूप पुरे विश्वभर में आर्थिक, सामाजिक, राजनिति और सांस्कृतिक, तकनिकी दृ संचार, यातायात आदि के क्षेत्र मे काफी तेजी से वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण ने मानव जीवन को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो तरिके से प्रभावित किया है। तकनिकी क्षेत्रों को अविश्वसनिय तरिके से व्यवसाय, व्यापार, सुरक्षित सीमाओं तक आसानी से विस्तार करने की आश्चर्यजनक अवसरों को प्रदान किया है। एक समय था जब एक दूसरे से सम्पर्क करने के लिए पत्र लिखकर बाते करते थे लेकिन आज जनसंचार माध्यम के कारण बाते करना, संदेश पहुंचाना आसान हो गया है। इन माध्यमों में तकनिकी का उपयोग किया जाता है। एक स्थान पर घटी घटना अगले मिनटों में विश्व के किसी कोने मे पहुंच जाती है वो भी जनसंचार माध्यमों के कारण। संचार माध्यमों का इस्तेमाल लोगों से संवाद करने के उपयोग में किया जाता है। जनसंचार में अखबार, रेडियो, टेलीविजन, मासिक पत्रिका आदि आते है। जिसका प्रभाव एक साथ कई लोगों पर होता है आज वैश्वीकरण का प्रभाव जनसंचार माध्यमों पर पडा दिखाई देता है इसका उदाहरण: हम इंटरनेट ले सकते है। इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइट जैसे फेसबुक, युट्युब, टयूटर इ. उपलब्ध है। जिसका प्रभाव समाज पर सीधा पड़ता है।

वैश्वीकरण की विशेषताएं :

१. **भौगोलिक दूरियों का सिमटना :** वैश्वीकरण के कारण भौगोलिक दूरियाँ कम हो गई है। फोन, फैक्स, कंप्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से पुरे विश्व से हम घर बैठे संपर्क कर सकते है।

२. **एक नई संस्कृति का उभरना :** वैश्वीकरण के कारण मीडिया की पहुंच पुरे विश्व भर होने के कारण एक नई संस्कृति का निर्माण हो गया है। टी-शर्ट, फास्ट-फूड, पॉप संगीत, नेट पर चेटिंग आदि तत्वों से बनी एक ऐसी संस्कृति सृजित हुई है, जिससे विश्व के हर देश का युवा प्रभावित हुआ है।

३. **उपभोक्तावाद को बढ़ावा :** वैश्वीकरण मे उपभोक्तावाद तथा बाजारीकरण को बढ़ावा देने के गुण है।

४. **श्रम बाजार का विश्वव्यापीकरण :** वैश्वीकरण की प्रक्रिया मे एक विशेषता श्रम बाजार के विश्वव्यापीकरण की भी है। सन् १९६५ मे लगभग ७.५ करोड़ लोग एक देश से अन्य देशों मे रोजगार के कारण प्रवासित हुए थे। वर्तमान मे इसमें और वृद्धि हुई है।

५. **शिक्षा का विश्वव्यापीकरण :** वैश्वीकरण के कारण शिक्षा का भी विश्वव्यापीकरण हो गया है। इसमें प्रगतीशील देशों के शिक्षा संस्थानों का पाठ्यक्रम विश्वस्तरीय हो गया है, जिससे इनके यहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी दुनिया के किसी भी देश मे शिक्षा ले सकते है तथा रोजगार पा सकते है।

६. **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आवाजाही :** वैश्वीकरण के कारण आज एक देश के डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, वास्तुविद, एकाउण्टेण्ड, प्रबन्धक, बैंकर तथा कंप्यूटर विशेषज्ञ आदि का विदेश आवागमन हो रहा है।

७. **बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की सक्रियता :** इस प्रक्रिया मे बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सक्रियता बढ़ गई है।

वैश्वीकरण के दोष अथवा दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं–

१. **आर्थिक असन्तुलन :** वैश्वीकरण के कारण विश्व मे आर्थिक अन्तुलन पैदा हो रहा है। गरीब राष्ट्र अधिक गरीब एवं अमीर राष्ट्र अधिक सम्पन्न हो रहे हैं। इसी प्रकार देश मे भी गरीब एवं अमीर व्यक्तियों के बीच विषमता बढ़ रही हैं।

२. **देशी उद्योगो का पतन :** वैश्वीकरण के कारण के कारण स्थानीय उद्योग धीरे धिरे बंद होते दिखाई दे रहे है। बाहर से आने वाला माल आकर्षित तथा कम किंमत पर मिल जाने के कारण स्थानीय माल कोई नहीं ले रहा है। इस वजह से देशी उद्योग बंद होने के कगार पर हें।

३. **बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभुत्व :** बहुराष्ट्रीय कंपनियोंके बढते हुए कदम से स्थानीय उद्योग बंद हो रहे है।

४. **बेरोजगारी में वृद्धि :** वैश्वीकरण के कारण विदेशी माल मुक्त रूप से भारतीय बाजारों में प्रवेश कर गया है। मशिनों द्वारा किए गये उत्पाद की किंमत कम होने से मंजुरो द्वारा स्थानीय उत्पाद कम तथा किंमत ज्यादा होने के कारण स्थानीय उद्योग धिरे धिरे बंद होने के कारण यहां के मजदुरों पर बेरोजगारी की नौबत आ गई है।

५. **राष्ट्र प्रेम की भावना को आघात :** वैश्वीकरण के कारण अन्य देशों की वस्तूएं अपने देश में आ जाने से लोग विदेशी वस्तुओं का उपभोग करना शान समझते है एवं देशी वस्तुओं को घटिया एवं तिरस्कार योग्य समझते हैं।

६. **घातक अन्तर्राष्ट्रीय कानून :** अन्तर्राष्ट्रीय पेटेन्ट कानून, वित्तीय

कानून, मानव सम्पदा अधिकार कानूनों का दुरूपयोग किया जा रहा है। पेटेन्ट की आड़ मे बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ शोषण कर रही है। कई परम्परागत उत्पादन पेटेन्ट के अंतर्गत आने के कारण महँगे हो गए है।

७. **विलासिता के उपयोग मे वृद्धि :** वैश्वीकरण के कारण विलासिता के साधन, वस्तुएं एवं अश्लील साहित्य कि बहोतरी हो गई है। इन साधनों का भारतीय बाजारों में निर्बाध प्रवेश हो गया है। इससे भारतीय सांस्कृतिक पर खतरा बढ़ गया है।

इस प्रकार वैश्वीकरण एक मीठा जहर है, जो अर्थव्यवस्था को धीरे-धीरे गला रहा है, और हमें आर्थिक परतन्त्रता की ओर ले जा रहा है।

जनसंचार :

जन तथा संचार से जुडकर जनसंचार शब्द सृजित हुआ है। विचारों के आदान-प्रदान की सामूहिक प्रकिया जनसंचार कहलाती है। भाषा द्वारा हम अपने विचार तथा भावनाओं को अभिव्यक्त करते है।

जनसंचार की परिभाषा :

डैनिस मैक बेल के अनुसार संचार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेश्यों के प्रेषण के रूप में स्वीकार किया जा सकता हें। कोई भी व्यक्ति संचार के बिना जी नहिं सकता।

श्री राजेंद्र के अनुसार– संचार या जनसंचार विचारों, सूचनाओ उत्प्रेरक संकेतो के आदान-प्रदान से ही हमारे समग्र जीवन मूल्य और संस्कृति की संरचना होती है।

जनसंचार के माध्यम

१. रेडियो,
२. सिनेमा,
३. समाचारपत्र,
४. किताबें,
५. मोबाइल,
६. इंटरनेट आदि

जनसंचार की विशेषताएं :

१. जनसंचार में सन्देश का निर्माण करने वाला एक व्यक्ति न होकर एक समूह व संगठन होता है।
२. जनसंचार में सन्देश की विषय वस्तु का चयन आम व्यक्ति को ध्यान

में रखकर किया जाता है।

३. जनसंचार में व्यक्ति विभिन्न सामाजिक वर्ग के हैं उनकी संस्कृति, भाषा, रूचि आदि भिन्न हैं।

४. जनसंचार में संदेश प्राप्त करनेवाला अपेक्षाकृत गुमनाम है। संचारक नहीं जानता की किस व्यक्ति को संप्रेषण कर रहा।

५. संदेश प्राप्त करनेवाला शारीरिक तौर पर संदेश भेजनेवाले से अलग है।

जनसंचार माध्यम का कार्य एवं महत्व :

सभी जन माध्यम विभिन्न रूप से समाज के लिए काम करते हैं। यह देश के संपूर्ण विकास में एक निश्चित भूमिका अदा करते हैं। इसके कई महत्वपूर्ण कार्य हैं जो इस प्रकार है –

१. जनसंचार का उपयोग समाचार तथा सूचना या जानकारी प्रचारित व प्रसारित करने के लिए किया जाता।

२. जनसंचार के माध्यम से किसी घटना का विश्लेषण तथा मूल्यांकन उचित परिप्रेक्ष्य में रखकर हमें देता है।

३. शिक्षा के कार्य मे जनसंचार के माध्यम का उपयोग किया जाता है।

४. व्यवसाय, निगम तथा व्यक्ति जन माध्यम के द्वारा अपने संबंधों को स्थापित या रूपांतरित करने का प्रयत्न करते हैं।

५. आर्थिक व्यवस्था में वितरण प्रक्रिया में मीडिया का उपयोग किया जाता है।

६. जनसंचार के माध्यम से विज्ञापन द्वारा जनता को नए प्रोडक्ट की जानकारी देते हैं। तथा किंमत के बारे मे जानकारी देकर उन्हे खरीदने के लिए राजी कराते हैं।

७. जनसंचार के माध्यम से लोग फुरसत के समय में मनोरंजन का आनंद लेते हें।

निष्कर्ष : वैश्वीकरण के कारण जनसंचार के माध्यम से आज विश्व करीब आ गया है। मानवता, अस्मिता, संस्कृति, के बारे में पहचान हो गई है। वैश्वीकरण और जनसंचार के माध्यम परस्पर जोडनेवाला प्राणतत्व है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

१. सोशल मीडिया-समसामाईक परिप्रेक्षय् में, डॉ. विजय गाडे
२. वैश्वीकरण और संबंध एक बदलती हुई दुनिया की पहचान की राजनीति रोमैन और लिटिलफील्ड (२००४), शैला एल. कोचर
३. विश्व संघवादी घोषणा पत्र राजनीतीक वैश्विकरण के लिए मार्गदर्शिका, स्टाइपो, फ्रांसेस्को